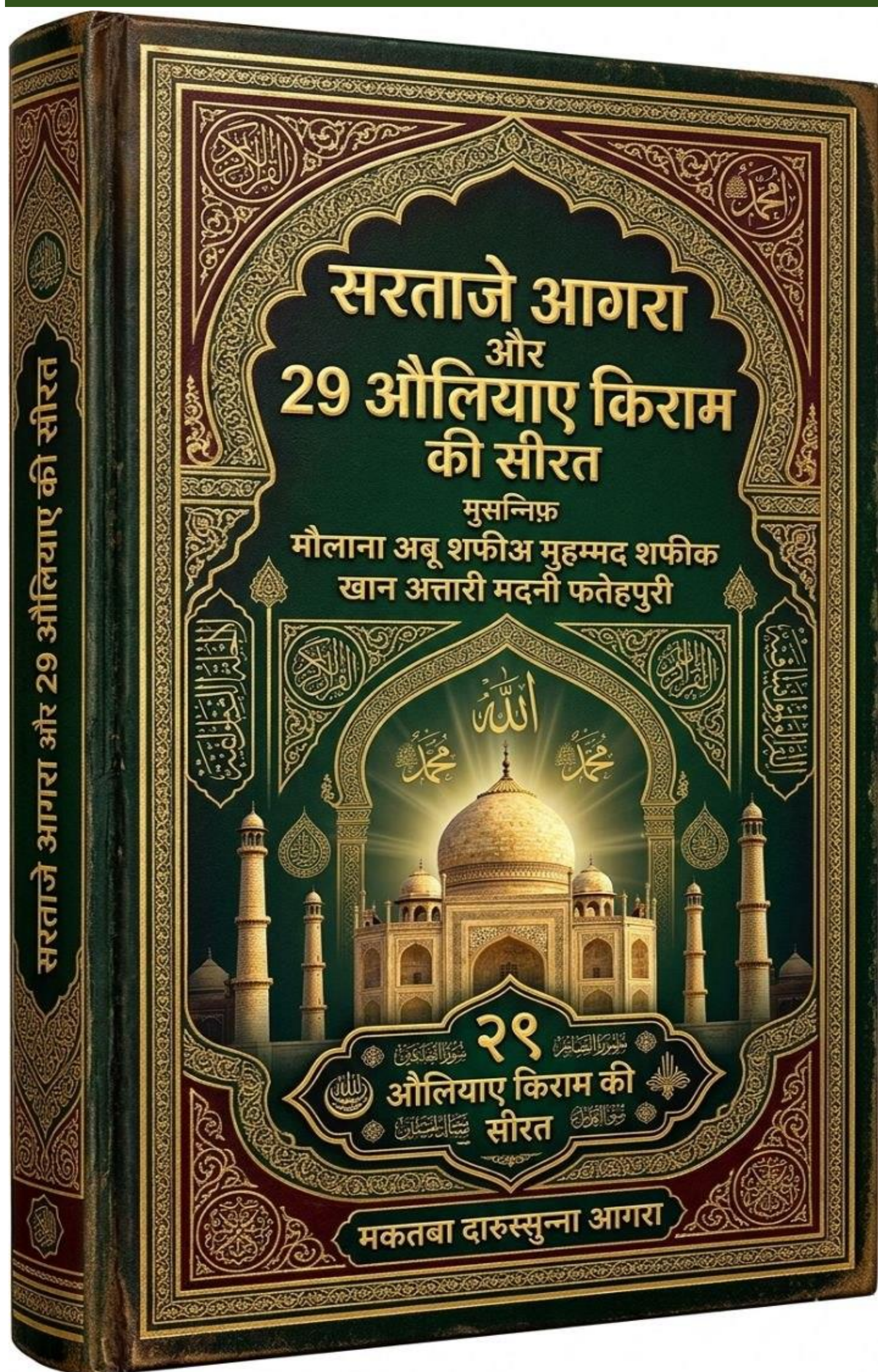
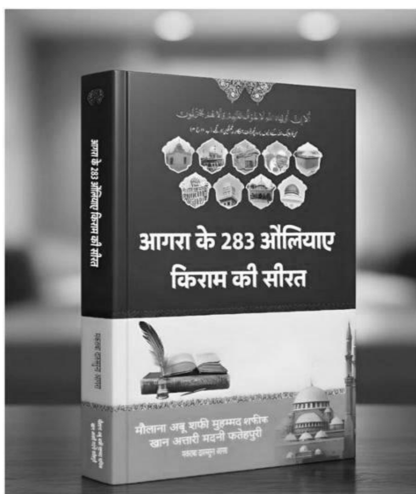
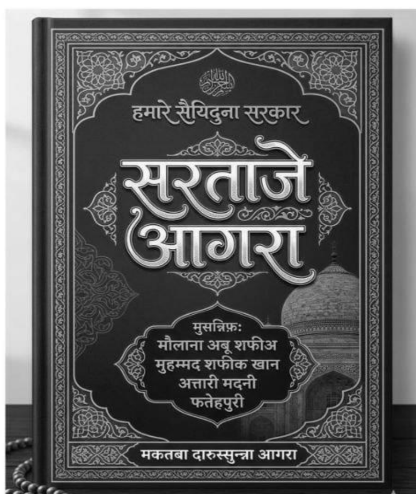
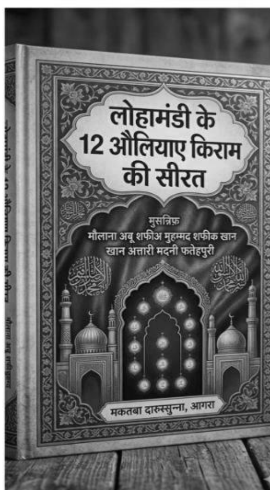
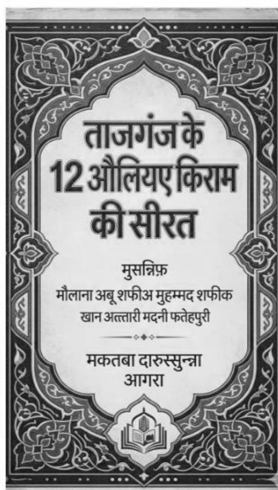

सरताजे आगरा
और
29 औलियाए किराम
की सीरत
मुसन्निफ़
मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक
खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी
२९
औलियाए किराम की
सीरत
मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा
सरताजे आगरा और 29 औलियाए की सीरत

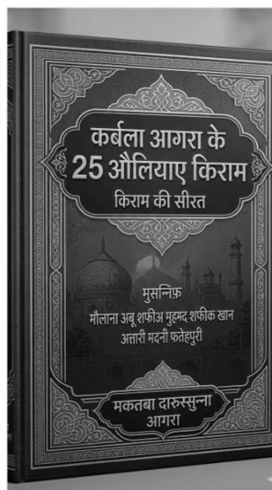
आगरा के औलियाए किराम की सीरत को आम करने में मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा का साथ दें और शादियों, दावतों और मरहूमीन के ईसाले सवाब के लिए किताब तकसीम करवायें और औलियाए किराम के फ़ैज़ान से मालामाल हों।











किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल कीजिए :8808693818

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मुसन्निफ़ का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम **मुह़म्मद शफीक़ खान**, वालिद का नाम **मुह़म्मद शरीफ खान** है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अ़त्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, **मुह़म्मद इल्यास अत्तार क़ादरी** रज़वी से **2004 ईस्वी** में बैअ़त होने की वजह से अपने नाम के साथ अ़त्तारी लिखते है, आपकी विलादत क़स्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश **10 जून 1986 ईस्वी** है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन **2000 ईस्वी** में ऐ. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर **4 साल** क़ियाम किया फिर **2004 ईस्वी** में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा’वते इस्लामी का दीनी माहौ़ल मिला, दा’वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ कोर्सेज़ किये और **2006 ईस्वी** में अपने ही इलाके के दारुल उ़लूम बनाम **जामिया अ़रबिया गुलशने मा'सूम** कस्बा ललौली में **क़ारी इक़बाल अह़मद अ़त्तारी** से क़ुरआ़ने पाक नाज़िरा और ह़ज़रत **मौलाना अ़तीक़ुर्रह़मान मिस्बाही** से **दर्से निज़ामी** के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता’लीम हासिल करने के लिये **चिरैयाकोट जिला मऊ** तशरीफ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इ़ल्मी इदारे अल

जामिअ़तुल अशरफिया मुबारकपुर आ'ज़मगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़्ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ **दारुल उ़लूम ग़ौसिया** (जो जिला **आ'ज़मगढ़ के गाँव सरय्या** में वाक़ेअ़ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना, **फैज़ाने अ़त्तार नेपालगंज**,नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए ह़दीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फराग़त के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना **फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर,आगरा** तशरीफ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर **बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका** के जामिअ़तुल मदीना तशरीफ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआ़त के दरजए सानिया में चलने वाली इ़ल्मे सर्फ की किताब बनाम **मराहुल अरवाह** की उर्दू शरह़ **शाफ़िकुल मिस्बाह** और दरजए राबिआ़ में चलने वाली इ़ल्मे नहव की किताब बनाम **शरह जामी** की उर्दू शरह़ **अश शफीकुन नोअमानी** तसनीफ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली ह़दीस की किताब बनाम **अल अरबईने नवाविय्या** की उर्दू शरह़ **शफ़ीकिया** तह़रीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफात का सिल्सिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 65 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईस्वी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिए आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत **अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी** साहिब ने सिलसिलए कादरिया, रज़्विया की **खिलाफ़तो इजाज़त** से नवाज़ा।

खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक **मुदर्रिस** और **मुसन्निफ़** हैं उसी तरह **मुक़र्रिर** और **मुबल्लिग** भी हैं। आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक़्तन फ़वक़्तन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में **{दीन सीखो और इनाम पाओ}** के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है। अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फे क़बूलियत अ़ता करके मौसूफ के लिये तोशाए आखिरत बनाए। आमीन

अज़ : अल आजिज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा

सवालः औलियाए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा क्या होना चाहिए ?

जवाबः किसी वली के मज़ार मुबारकपर हाज़िरी का तरीक़ा येह है कि अगर मुम्किन हो तो पायंती यानी क़दमों की तरफ़ से आए, चेहरा मुबारका की तरफ़ मुंह और काबे की तरफ़ पीठ कर के खड़ा हो, कमो बेश चार हाथ यानी दो गज़ दूर रहे, अगर कोई बिल्कुल क़रीब चला गया या ज़्यादा दूर रह गया तब भी कोई गुनाह नहीं है।

तिलावत और दीगर इबादात करने वाले को तशवीश ना हो इस लिए दर्मियानी आवाज़ में इस तरह सलाम अर्ज़ करे अस्सलामु अलैकुम या सय्यिदी यानी ऐ मेरे आक़ा! आप पर सलाम हो।

(فتاویٰ رضویہ،۹/ ۵۲۲ماخوذ اًرضافاؤنڈیشن مرکز الاولیالاہور)

अब एक बार सूरए फ़ातिहा, 11 मर्तबा क़ुल हुवल्लाह शरीफ़ अव्वल व आखिर तीन तीन बार दुरूदे पाक पढ़ कर ईसाले सवाब करें, ईसाले सवाब के लिए यही पढ़ना लाज़िमी नहीं है बल्कि कुछ भी पढ़ सकते हैं मिसाल के तौर पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर भी ईसाले सवाब हो सकता है बल्कि नमाज़ें, रोज़े, हज, उमरा, नेकी की दावत, इन्फ़िरादी कोशिश, रास्ते से कोई पत्थर वग़ैरा हटा दिया ताकि मुस्लमानों को तकलीफ़ ना हो, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिरकत अलग़रज़ किसी भी नेक काम का ईसाले सवाब किया जा सकता है लिहाज़ा इस तरह के नेक कामों का सवाब मज़ार वाले बुज़ुर्ग की बारगाह में नज़्र कर दें, फिर वापिस होते हुए उलटे क़दमों पलटें ताकि मज़ार मुबारक को पीठ ना हो।

आगरा के औलिया का मुख़्तसर तआरुफ़

عِنْدَ ذِکْرِ الصَّالِحِیْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَۃُ

सालिहीन यानी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त अल्लाह पाक की रहमत नाज़िल होती है।

शैख़ुल इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह अंसारी से मनक़ूल है कि जहां तक हो सके अल्लाह पाक के औलिया की बातें याद रखो और जो येह भी ना हो सके तो उन के नाम मुबारक ही याद रखो कि यही काफ़ी हैं।

(بوستانِ اخیار، ص۱)

हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ शैख़ निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह अमीर ख़ुसरु रहमतुल्लाह अलैह से अक्सर इरशाद फ़रमाया करते थे कि : ऐ ख़ुसरु! मशाइख के मलफ़ूज़ात यानी उनकी बातों को याद करो और उनका ज़िक्र किया करो, कि उनके ज़िक्र से दिल में कैफ़ीयत पैदा होती है।

(بوستانِ اخیار، ص۱)

मौलाना सैय्यिद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह साहिबे सबए सनाबिल फ़रमाते हैं : सालिहीन का ज़िक्र ग़मगीन दिलों के सुकून का सबब होता है, येह बुज़ुर्गाने दीन अगरचे हमारी ज़ाहिरी निगाहों से दूर और आलमे ख़ाक से रुख़स्त हो कर बहिश्त नशीनों के हम नशीन हैं लेकिन क़ुरआने पाक के फ़रमान से अब तक ज़िंदा हैं और क़ियामत तक ज़िंदा रहेंगे जैसा कि अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا-بَلْ اَحْیَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ یُرْزَقُوْنَ(۱۶۹)

तरजमए कंज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा ना ख़्याल करना बल्कि वो आपने रब के पास ज़िंदा हैं रोज़ी पाते हैं। (پ۴، آلِ عمران،۱۶۹)

लेकिन उन बुज़ुर्गाने दीन के ज़ाहिरी तौर पर इस दुनिया से चले जाने के बाद भी हम उनकी रूहों से उसी तरह फ़ैज़ हासिल कर सकते हैं जैसा कि हम उनकी दुन्यवी ज़िंदगी में फ़ैज़ हासिल करते थे, उनके मुक़द्दस तज़किरे, उन के मुबारक कलिमात (यानी उनकी बातें) हमारी हिदायत का सबब बन सकते हैं, उनके हालात को पढ़ना, लिखना, सुनना इबादत में दाख़िल और बरकत का सबब है और उनके अहकाम व हिदायत की पैरवी नजात का सबब है, उन में वही कीमियाई असर और मक़बूलियत की तासीर मौजूद है जो साहिबे कलिमात की नज़र व ज़बान में मौजूद थी, हाँ ! नियाज़ मंदी, ख़ाकसारी ज़रूरी और अक़ीदत लाज़िमी है।

अलबत्ता जहां तक मुम्किन हो औलिया अल्लाह के मज़ारात पर ख्वाहिशाते दुन्यवी को नज़र अंदाज कर के दौलत ख़ुदा शनासी के फ़ैज़ की दुआ करनी चाहिए। आगरा शहर में कई सिलसिलों के बुज़ुर्गाने दीन मौजूद जिनकी तफ़सील येह है :

ख़ानवादए चिश्तिया के बुज़ुर्गाने दीन

ख़ानवादए चिश्तिया में शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, अब्दुल मोमिन चिश्ती, शाह मुहम्मद चिश्ती, शैख़ मुहम्मदी चिश्ती, मीर मुहम्मद सालेह कशफ़ी, शैख़ मुनव्वर चिश्ती, शाह यार मुहम्मद चिश्ती, शैख़ सिधारी चिश्ती, शैख़ ज़ैनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुज़ुर्गाने चिश्त अहले बहिश्त का तज़्किरा इस किताब में मौजूद है।

ख़ानवादए नक़्शबंदिया के बुज़ुर्गाने दीन

मशाइख़ीने नक़्शबंदिया में हज़रत शाह अबुल उला, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, अमीर अब्दुल्लाह, मीर मुहम्मद नोअमान, ख़्वाजा मुहम्मद मीर, मुहम्मद इब्राहीम, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा।

ख़ानवादाए शत्तारिया के बुज़ुर्गाने दीन

और मशाइख़ीने शत्तारिया में शैख़ ज़ियाउल्लाह, शैख़ अब्दुल्लाह, शैख़ बुरहान रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा।

ख़ानवादए मदारिया के बुज़ुर्गाने दीन

और ख़ानवादए मदारिया में शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी, मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैहिम का तज़्किरा मौजूद है।

नक़्शबंदिया पौधे में चिश्तिया शाख़ पैवंद कर के एक जदीद शजर पुर समर इस बाग़ में तैयार किया गया है जो अबुल उलाईया के नाम से मशहूरो मारुफ़ है, इस की शाख़ें दूर दूर तक फैली हुई हैं, इस सिलसिले के बानी हज़रत शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के इलावा अमीर फ़ैज़ुल उला, अमीर नूरुल उला, अमीर अब्दुल माजिद, अमीर अब्दुल मुनइम, ख़लीफ़ा अबुल क़ासिम, मुल्ला मुहम्मद उमर, सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल, सैय्यिद मुहम्मद जाफ़र, शाह फ़रहाद, शैख़ वली मुहम्मद वग़ैरा इसी फ़ल आवर दरख्त के औलियाए किबार हैं जिनका ज़िक्रे खैर भी इस किताब में मौजूद है।

इनके इलावा और भी बहुत सारे बड़े बड़े औलियाए कामिलीन रहमतुल्लाह अलैहिम का हैं जिनके सिलसिलए मारिफ़त का पता नहीं चला, या कई कई सिलसिलों में मुंसलिक हैं, शैख़ अबुल फत्ताह, मीर अबुल गैस बुख़ारी, शैख़ अबू बक्र क़ुरैशी, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, हाफ़िज़ अहमद, शैख़ अफ़ज़ल मुहम्मद, सैय्यिद बाक़ी, शैख़ बा यज़ीद शरवानी, शैख़ बा यज़ीद ख़वेशगी, ख़्वाजा बख़्तियार, सैय्यिद बदरुद्दीन, सैय्यिद भिकारी, मीर तपां, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, शैख़ चंदन क़ुरैशी, मौलाना शैख़ हसन शीराज़ी, शैख़ हुसैन बदखशी,

सैय्यिद हुसैन, शाह हैदर, ख़्वाजा ख़िज़र, शैख़ ख़लील, अमीर सैय्यिद दाऊद, शाह रफ़ीअ सब्ज़ पोश, मीर रफ़ीउज़्ज़मान, शैख़ सालिम, सक़्क़ा, सैय्यिद शाह मीर, मीराँ आरिफ़ हुसैनी, शैख़ अब्दुल्लाह खटवासन, शैख़ अब्दुल्लाह बुख़ारी, शैख़ अब्दुलहकीम, ख़्वाजा अब्दुर्रऊफ़, शाह अब्दुल लतीफ़ बरी, शैख़ अबदी, शैख़ फ़तहुल्लाह, शाह फ़तह अली, शैख़ कमाल, शैख़ कमालुद्दीन हुसैन, शाह मुजाहिदुद्दीन, शैख़ मुहिब्बुल्लाह, सैय्यिद मुहम्मद बुख़ारी, शैख़ मुहम्मद ज़ाहिद, शैख़ मुहम्मद आरिफ़, मौलाना मुहम्मद आरिफ़, शैख़ महमूद, सैय्यिद मुर्शिदुद्दीन, शैख़ नाज़िर, शैख़ नसीरुद्दीन अंसारी, शाह नूरुज़्ज़मान, शैख़ वली मुहम्मद नारनौली, शाह हरे भरे, शैख़ यूसुफ़ लंक, शैख़ यूसुफ़ अंसारी, शाह अज़मतुल्लाह, शेर अली शाह, नन्हे मियां रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा ।

आरिफ़ा और सालिहा औरतों में से बीबी जीवनी, चांद बीबी, बीबी ख़ाकी शाह, बीबी क़ुतुबन, बीबी नबफ़शा, बेगम सुल्तान रहमतुल्लाह अलैहिन्ना मौजूद हैं।

आगरा शहर का आबाद होना

आगरा अगर्चे बहुत पुराना शहर है मगर इस्लामी ज़माने और सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने से पहले येह एक गुमनाम जगह से ज़्यादा वुक़अत नहीं रखता था, 907 हिज्री बमुताबिक़ 1501 ईस्वी में सिकन्दर लोदी ने इस को नये सिरे से आबाद कर के अपना दारुल खिलाफ़त मुक़र्रर किया, इस बादशाह की दरवेश परस्ती, इल्मी क़दरदानी और कमाल पर्वरी की बरकत से चंद ही रोज़ में येह नौ आबाद शहर मशाइख़ीने नामदार का मर्कज़ और शीराज़ व बग़दाद की तरह दारुल उलूम बन गया और सुल्तान की नेक नीय्यती, ख़ुदा दोस्ती, कमाल पर्वरी

बहुत से अहले दिल बुज़ुर्गों और अहले कमाल आदमियों को दूर दराज़ इस्लामी मुल्कों से आगरा में खींच लाई और यहां की सुकूनत का बाइस हुई।

सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद

चुनांचे शैख़ यूसुफ़ लंक, सैय्यिद रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस, सैय्यिद अब्दुल्लाह दानिशमंद, शैख़ यूसुफ़ अंसारी, शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, शैख़ बुढन शत्तारी, शैख़ चंदन क़ुरैशी, शैख़ नसीरुद्दीन तमीमी अंसारी, शैख़ अबुल फ़तह मक्की, शैख़ अबू बक्र क़ुरैशी, सैय्यिद इस्माईल क़ादरी, शैख़ अब्दुल मोमिन चिश्ती, शैख़ हसन शीराज़ी, क़ारी अब्दुल मलिक, शैख़ महमूद, सैय्यिद जाफ़र मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुज़ुर्गाने अकबराबाद सुल्तान सिकन्दर लोदी के अहद यानी ज़माने में आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर आबाद हुए।

उनके बाद मुफ़्ती अबुल फ़तह, मुफ़्ती बहाउद्दीन, सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, शैख़ जलाल अंसारी, सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, शैख़ मुबारक, शैख़ ज़ैनुद्दीन, शैख़ शहाबुद्दीन मुअम्माई, मौलाना अबुल वाजिद फ़ारग़ी वगैरा बाबरी, हुमायूंनी अहद यानी ज़माने में आगरा तशरीफ़ लाए।

दसवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा

दसवीं सदी हिज्री के अख़ीर तक जो अहदे अकबरी का आख़िरी ज़माना था, आगरा में उलमा फुज़ला और मशाईख़ीन का ख़ूब दौर दौरा रहा और हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, सैय्यिद बदरुद्दीन, क़ाज़ी जलालुद्दीन, क़ाज़ी नूरुल्लाह शोस्तरी, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, शैख़ मुनव्वर चिश्ती, शैख़ आरिफ़ हुसैनी, शैख़ अब्दुल वह्हाब, मौलाना कमालुद्दीन हुसैन,

शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, क़ारी शैख़ मुहम्मद ख़ालिदी, मौलाना मीर कलां, मौलाना मीर, क़ाज़ी नासिर, शैख़ अब्दुर्रहमान क़ादरी, अल्लामा अबुल फ़ज़्ल, शैख़ अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी, शैख़ अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ अबुल ख़ैर रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा उलमा फुज़ला और ख़ुदा शनास आगरा में तशरीफ़ लाए या पैदा हुए।

ग्यारहवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा

ग्यारहवीं सदी में जो कि जहांगीर और शाहजहाँ और आलमगीर का अहदे सलतनत है, ब निस्बत दसवीं सदी के तनज़्ज़ुली के आसार नुमायां होने लगे मगर फिर भी बाज़ मशाईख़ीन के तुफ़ैल हरा भरा रहा चुनांचे हज़रत शाह अबुल उला, मीर मुहम्मद नोअमान, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, सैय्यिद बाक़ी, शैख़ इस्माईल चिश्ती, अल्लामा अफ़ज़ल ख़ां, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, सैय्यिद अब्दुल क़ादिर बुख़ारी, अमीर फ़ैज़ुल उला, शैख़ मुहम्मदी, शैख़ मुहम्मद सालेह, शैख़ नाज़िर, मुल्ला अब्दुल अज़ीज़, मुल्ला अब्दुर्रशीद रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा बड़े बड़े मशहूर औलिया अल्लाह और उलमा, फुज़ला इस सदी में भी पैदा हुए।

बारहवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी में इस्लामी सल्तनत के तनज़्ज़ुल के साथ आगरा के मशहूर औलिया में भी हैरत अंगेज़ तनज़्ज़ुल पैदा हुआ, अय्यामे तवाइफ़ुल मुलूकी और जाटों और मराठों के ज़माने के तमाम शुरफा और मशाईख़ीन आगरा से रुख़स्त हो गए, जिस का येह नतीजा है कि तक़रीबन पूरी सदी में सिफ़र ही सिफ़र नज़र आता है, उस ज़माने से अंग्रेज़ों के ज़माने तक ऐसा तारीक यानी अंधेरा ज़माना गुज़रा कि बड़े बड़े औलिया

अल्लाह और मशाईख़ीन की ख़ानक़ाहें, दरगाहें और मज़ारात तक खुद खुदा कर खत्म हो गए या कसमपुर्सी की वजह से बेनाम व लापता हो गए, किस क़द्र अफ़सोस की बात है कि पुराने बुज़ुर्गाने दीन रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात में सिर्फ दो एक मज़ार मशहूर और चंद मज़ारात का निहायत तलाशो तहक़ीक़ात से पता चला है, शाह अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, मौलाना मीर कलां, शैख़ इस्माईल चिश्ती, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा में से औलियाए किबार यानी बड़े औलियाए किराम के मज़ारात तक का पता व निशान नहीं मिलता, चंद बा फ़ैज़ व नूरानी मज़ारात मौजूद हैं, उन के मकीनों का नाम बताने वाला दुनिया में कोई नहीं मिलता।

अफ़सोस कि शैख़ मुबारक, शैख़ फ़ैज़ी, शैख़ अबुल ख़ैर वगैरा में से मशाहीर के मक़ाबिर नेस्तो नाबूद कर दिए गए और किसी को गवर्मैंट को मुतावज्जेह करना क्या मा'ना उफ़ तक करने की तौफ़ीक़ ना हुई।

जिनके नक़्शे पा को रखती थी ज़मीं सर पर ब फख्र
तुर्बुतों में ख़ाक आलूदा हैं वो आली गुहर
नाम उनका कोई अब भूले से भी लेता नहीं
जिनके दरवाज़ों पे डंका बजता था शामो सहर
ख़ाक में मर कर मिले अफ़सोस वो आली दिमाग़
अब निशाने क़ब्र भी उनके नहीं आते नज़र

सैंकड़ों मज़ारात आबादी में आ कर लापता हो गए यानी आबादी बढ़ने की वजह से मज़ारात खत्म कर दिये गये, पुराने बुज़ुर्गाने दीन की ख़ानक़ाहें अक्सर लबे जमुना यानी जमुना नदी के किनारे थीं, मुग़लिया अहदे सल्तनत यानी ज़माने में वहां अमीर लोगों ने बड़ी बड़ी आलीशान

हवेलियाँ और बाग़ात तामीर कराये, कुछ आसार यानी निशानियाँ उस ज़माने में नेस्तो नाबूद हो गए, अब उस मक़ाम यानी जगह पर गैर मुस्लिमों का मुहल्ला बेलन गंज आबाद है, जिस में ग़ालिबन एक घर भी मुसलमान का नहीं है, मुग़लिया ज़माने के अमीर लोगों की बड़ी बड़ी हवेलियों में गैर मुस्लिम साहूकार आबाद हैं, इस से आगे बढ़ कर जान साहिब मशहूर सौदागर के वसीअ कारख़ाने (फ़्लोर मिल्ज़, कॉटन मिल्ज़, बर्फ़ कारख़ाना वग़ैरा) और पानी पहुंचाने के कारख़ाने वग़ैरा बन गए हैं, दो एक मज़ार जान साहिब के कारख़ानों के अंदर अब तक मौजूद हैं, मगर साहिबे मज़ारात के नामो निशान का कुछ पता नहीं चलता, अब इस नवाह यानी अतराफ़ में हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस और शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैहिमा के दो पुराने मज़ारात मशहूरो मारूफ़ बाक़ी रह गए हैं।

तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी हिज्री की तारीकी के बाद तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज्री के बुज़ुर्गाने दीन नेमते ग़ैर मुतरक़्क़बा मालूम होते हैं, मौलाना ज़ियाउद्दीन बलख़ी, मौलाना अहमदी क़ादरी, मौलाना आदिल, सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी, शाह मुहम्मद चिश्ती, हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन, हकीम सैय्यिद महेर अली, शाह बेदार बख्त, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह, मियां नज़ीर, शैख़ इमाम अली शाह, सल्लू शाह मज्ज़ूब, मिर्ज़ा अली शाह मज्ज़ूब, बब्बू शाह मज्ज़ूब, मौलवी सैय्यिद वारिस अली, हम्द शाह व मुहब्बत शाह नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैहिम।

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने **“बोस्ताने अख़्यार”** नाम की किताब 116 साल पहले लिखी थी जिस को नई तरतीब और तस्हील के साथ मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफीक ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी साहिब ने नया नाम **“आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत”** दे कर पेश किया है।

येह किताब महेज़ एक तस्नीफ़ नहीं बल्कि आगरा की रुहानी तारीख़ का ज़िंदा दस्तावेज़ है। आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत में वो पाकीज़ा हस्तियाँ जमा की गई हैं जिनकी बरकतों से आगरा की सर ज़मीन सदियों से मुनव्वर चली आ रही है।

आगरा की सर ज़मीन वो सर ज़मीन है जिसको सैकड़ों साल हिन्दुस्तान की राजधानी बनने का ऐज़ाज़ हासिल है। आपको जान कर ख़ुशी होगी कि आगरा की सर ज़मीन में :

🕌 अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी रहमतुल्लाह अलैह के पोते शागिर्द

🕌 अल्लामा सख़ावी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 हज़रत बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा

🕌 मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा

🕌 मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे

🕌 हज़रत इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा

🕌 अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत अब्दुर्रहीम मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब सैय्यिद आले रसूल मरहरवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलैह, कुतुबे आलम रहमतुल्लाह अलैह के औलाद

🕌 मीर सैय्यिद शरीफ जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद

इनके इलावा और बहुत बुलंद पाया औलियाए किराम के मज़ारात मौजूद और उनकी सीरत इस किताब में महफ़ूज़ है।

इस किताब की सबसे बड़ी ख़ूबी येह है कि 283 औलियाए किराम का जामेअ तज़्किरा मुस्तनद तारीख़ी हवालों के साथ आम फहेम मगर इल्मी और वक़ार भरे उस्लूब में पेश किया गया है, जिसे पढ़ने वाला ख़ुद को आगरा की गलियों, ख़ानक़ाहों और मज़ारात की रुहानी फ़िज़ा में महसूस करेगा।

येह किताब मुस्लमानों के लिए बाइसे फ़ख़र, तलबा और मुहक़्क़िक़ीन के लिए क़ीमती सरमाया, और हर आशिक़े औलिया के लिए लाज़िमी मुताला है।

अगर आप चाहते हैं कि आपकी नस्लें अपने औलिया को पहचानें, घरों में दीनी व रुहानी माहौल क़ाईम हो और एक नायाब तारीख़ी किताब आपके घर की ज़ीनत बने तो आज ही इस किताब को हासिल करें। यक़ीन मानिए जो एक बार पढ़ेगा, वो दूसरों को भी पढ़ने पर मजबूर कर देगा।

सदक़ए जारिया का बेहतरीन मौक़ा

ऐ आशिकाने औलिया ! आइए! अक़ाबिर व औलियए किराम की मुक़द्दस ज़िंदगी को आम करें और अपनी आख़िरत सँवारें।

किताब: बोस्ताने अख्यार

मौज़ू: आगरा के 283 बुज़ुर्गों व औलियाए किराम की पाक सीरत

इल्म, अमल और रूहानियत से भरपूर एक अन्मोल किताब

इस किताब को मस्जिदों में, मदरसों में, दरगाहों पर, ग़रीब मुसलमान और दीनी तलबा में इसाले सवाब के लिए तक़सीम करवा कर हमेशा का सवाब हासिल करें।

तक़सीम रेट:

- 1 किताब — ₹350
- 5 किताब — ₹1750
- 10 किताब — ₹3500

जो इल्म फैलाता है, वो सदियों तक ज़िंदा रहता है।

बुज़ुर्गों की सीरत आम करना, ईमान की ताज़गी है।

आज ही ऑर्डर देकर इस नेक काम में शरीक बनें।

आपके नामए अमल में हमेशा सवाब जुड़ता रहेगा।

नियत करें — इल्म बाँटें — सवाब कमाएँ।

असल क़ीमत **700 रुपये** रिआयती क़ीमत **350 रुपये**

आर्डर बुक करवाने के लिए इस नंबर राबिता कीजिए

राबिता नंबर : +91 8808693818

मकतबा दारुस्सुन्ना, F 1 mewati नगला, ताजनगरी 2, आगरा

सरताजे आगरा और 29 औलियाए किराम की सीरत

दरगाह अमीर सैय्यिद अबू उला (आगरा)

(1) सरताजे आगरा अमीर सैय्यिद अबुल उला

नसब नामा

अमीर सैय्यिद अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह आगरा के अफताब और हिन्दुस्तान के औलियाए आली मक़ाम और मशाइख़ीने ज़ी एहतिशाम और सादात में से हैं, सिल्सिलए नसब उनत्तीस वासतों से हज़रत इमामे हुसैन रहमतुल्लाह अलैह से मिलता है, आपके आठवें दादा अमीर इमादुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह और छठे दादा अमीर तक़ीउद्दीन किरमानी रहमतुल्लाह अलैह औलियाए किबार और मशाइख़ीने नामदार में से थे, माँ की जानिब से नसब नामा हज़रत ग़ौसुल अबरार ख़्वाजा उबैदुल्लाह अहरार रहमतुल्लाह अलैह तक पहुंचता है जिनके कमालात अज़हर मिनश्शम्स यानी सूरज से ज़्यादा ज़ाहिर हैं।

विलादत बा सआदत

आप रहमतुल्लाह अलैह के दादा ख़्वाजा अमीर अब्दुस्सलाम इब्ने अमीर अब्दुल मलिक इब्ने अमीर अब्दुल बासित इब्ने अमीर तक़ीउद्दीन किरमानी रहमतुल्लाह अलैह अकबर बादशाह के अहदे सल्तनत यानी ज़माने में अपने वतन समरक़ंद से अहलो इयाल के साथ हिन्दुस्तान में तशरीफ़ लाए थे, सफर के दौरान बमुक़ाम क़स्बा नरेला जो दिल्ली से ब जानिब लाहौर एक मंज़िल के फ़ासिला पर वाक़ेअ है, क़ियाम फ़रमाया, 990 हिज्री में

सैय्यिद अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह की विलादत बा सआदत वाक़ेअ हुई।

आप रहमतुल्लाह अलैह के दादा ख़्वाजा अमीर अब्दुस्सलाम रहमतुल्लाह अलैह नरेला से दारुस्सुरूर फ़तेहपुर सीकरी आए जो उस वक़्त अकबर बादशाह का दारुल खिलाफ़त यानी राजधानी था, यहां से आगे जाना चाहते थे मगर अकबर बादशाह ने उन से फ़तेहपुर सीकरी में रहने की दरख्वास्त की, वो राज़ी हो गए और फ़तेहपुर में सुकूनत इख्तियार फ़रमाई, फिर उस के बाद हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत और हज्जे बैतुल्लाह के वास्ते तशरीफ़ ले गए और बमुक़ाम मक्कए मुअज़्ज़मा सफ़रे आख़िरत इख्तियार फ़रमाया यानी उनका इंतिक़ाल हो गया।

वालिदे माजिद

आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद का नाम अमीर अबुल वफ़ा रहमतुल्लाह अलैह है और येह बदस्तूर फ़तेहपुर सीकरी में मुक़ीम रहे, जब उनकी ज़िंदगानी का दौर ख़त्म हुआ तो ख़्वाबगाह यानी मज़ार के वास्ते दिल्ली को पसंद किया और लाश मुबारक फ़तेहपुर सीकरी से ले जा कर ख़ाके पाक दिल्ली के सपुर्द की गई।

वालिदा माजिदा

आप रहमतुल्लाह अलैह की वालिदा माजिदा हज़रते ख़्वाजा मुहम्मद फ़ैज़ रहमतुल्लाह अलैह की दुख्तरे नेक अख़तर यानी बेटी थीं और हज़रते ख़्वाजा मुहम्मद फ़ैज़ रहमतुल्लाह अलैह बर्दवान शहर में नाज़िम के ओहदे पर फ़ाइज़ थे।

परवरिश और तालीम

अभी आप रहमतुल्लाह अलैह कम सिन ही थे कि आपके वालिद रहमतुल्लाह अलैह का साया आप रहमतुल्लाह अलैह के सर से उठ गया और आप

रहमतुल्लाह अलैह अपने दादा हज़रते अमीर अब्दुस्सलाम रहमतुल्लाह अलैह की शफ़क़त से भी महरूम रहे क्योंकि आप रहमतुल्लाह अलैह के दादा हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत के लिए गए थे और मक्का शरीफ़ में उनका विसाल हुआ।

आप रहमतुल्लाह अलैह के दादा जान रहमतुल्लाह अलैह ने हरमैन शरीफ़ैन जाते वक़्त आपको आपके नाना हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद फ़ैज़ रहमतुल्लाह अलैह के सिपुर्द फ़रमाया था और हज़रते ख़्वाजा मुहम्मद फ़ैज़ रहमतुल्लाह अलैह राजा मानसिंग कछवाहा गवर्नर बंगाल की तरफ़ से शहर बर्दवान के नाज़िम थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के नाना आप रहमतुल्लाह अलैह को अपने साथ बर्दवान ले गए, उन्हीं की निगरानी में आप रहमतुल्लाह अलैह की तालीमो तर्बीयत हुई, आप रहमतुल्लाह अलैह बहुत जल्द तहसीले उलूमो फ़नून से फ़ारिग़ हो कर तमाम उलूमे ज़ाहिरी व कमालाते बातिनी में माहिर हुए और फन्ने सिपहगरी में बेमिस्ल साबित हुए।

नाना का विसाल

अभी आप रहमतुल्लाह अलैह तमाम उलूमो फ़नून मुतदावला से फ़ारिग़ ही हुए थे कि आप रहमतुल्लाह अलैह के नाना हज़रत मुहम्मद फ़ैज़ रहमतुल्लाह अलैह किसी लड़ाई में शहीद हो गए।

ओहदा ए निज़ामत

आप रहमतुल्लाह अलैह के नाना हज़रते ख़्वाजा मुहम्मद फ़ैज़ रहमतुल्लाह अलैह के कोई लड़का नहीं था, राजा मानसिंग ने आप रहमतुल्लाह अलैह की लियाक़त और क़ाबिलियत देखकर आप रहमतुल्लाह अलैह के नाना रहमतुल्लाह अलैह की जगह आप रहमतुल्लाह अलैह को बर्दवान का नाज़िम मुक़र्रर कर दिया, चूंकि मशीयते इलाही शामिले हाल थी लिहाज़ा अज़ली इनायत ने दस्त गीरी फ़रमाई।

इशारत पुर बशारत

उन्ही दिनों में एक रात आप रहमतुल्लाह अलैह ने तीन बुज़ुर्गों को ख्वाब में देखा कि फ़रमाते हैं : ऐ सैय्यिद ! तुमने येह क्या वज़अ इख्तियार की है, हमारी वज़अ इख्तियार करो और फ़िक्रे मआश से बेफ़िक्र हो कर

'اَللّٰہُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ'

(यानी अल्लाह ही के नूर से आसमान व ज़मीन की रौशनी है)

के मज़हर बन जाओ, फिर एक बुज़ुर्ग ने उस्तुरे से आपके सर के बाल तराश दिए, दूसरे ने एक क़मीस पहनाई, तीसरे ने एक इमामा आपके सर पर रख दिया, येह तीनों बुज़ुर्ग में से एक हज़रते अली, दूसरे हज़रते इमाम हसन, तीसरे हज़रते इमाम हुसैन रज़ीअल्लाहु अन्हुम थे।

काया पलट

इस ख्वाब से आप रहमतुल्लाह अलैह का बेदार होना गोया ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार होना था कि हक़ीक़तो मारिफ़त की आँखें खुल गईं, आँख के खुलते ही दिल में शोरिशे अज़ीम यानी बड़ी जलन पैदा हुई और दिल में ऐसा जज़्बे का सैलाब आया जिसके अंदर फ़िक्रे मआश बह गई फ़ौरन हज्जाम को बुला कर बाल तरशवाए, खय्यात यानी दर्ज़ी से क़मीस सिल्वा कर पहन ली, बज़्ज़ाज़ से कपड़ा मंगा कर इमामा बांध लिया, ग़र्ज़ेकि तवंगरी लिबास को खिरक़ए दरवेशी से तब्दील कर के मुलाज़िमत यानी नौकरी का इस्तीफ़ा भेज दिया, नेक दिल राजा को जब येह हाल मालूम हुआ तो आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हो कर बहुत तसल्ली व तशफ्फी की और समझा बुझा कर आप को मुलाज़िमत छोड़ने से बाज़ रखना चाहा मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ने क़बूल ना फ़रमाया, इसी अरसे में अकबर बादशाह ने इंतिक़ाल किया और जहांगीर तख़्ते सल्तनत

पर बैठा, बहुत से उमरा और मंसबदार हाज़िरीए दरबार के वास्ते तलब हुए, आप रहमतुल्लाह अलैह ने इस मौक़े को ग़नीमत समझा और अकबराबाद यानी आगरा की तरफ़ रवाना हुए, रास्ते में क़स्बा मुनीर में हज़रत शाह दौलत मुनीरी रहमतुल्लाह अलैह से जो कि बुज़ुर्ग साहिबे बातिन थे कई दिन तक सोहबत गर्म रही और फ़ैज़ व बरकत से मालामाल हुए, आख़िरे कार अकबराबाद आकर शहेनशाह जहांगीर से मुलाक़ात हुई, जहांगीर आपके जमालो कमाल से बहुत मुताअस्सिर हुआ, आप बिला रोक टोक शाही दरबार में आने जाने लगे, एक दिन का वाक़िआ है कि साक़ी ने जहांगीर को जाम पेश किया, जहांगीर ने अपने हाथ से वो जाम आप रहमतुल्लाह अलैह को दिया, आप रहमतुल्लाह अलैह ने वो जाम लेकर वहीं फेंक दिया, जहांगीर ने दूसरा जाम दिया, आप रहमतुल्लाह अलैह ने लेकर उसे भी फेंक दिया, जहांगीर बादशाह नशे की हालत में आप रहमतुल्लाह अलैह से मुख़ातब हो कर कहने लगा क्या तुम ग़ज़बे सुल्तानी से नहीं डरते ? आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया गुस्सा ए सुल्तानी से नहीं डरता, कहरे रब्बानी से डरता हूँ।

तर्के दुनिया

इस के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह ने शाही मुलाज़िमत छोड़ दी, अपने मकान में तशरीफ़ लाए, अपना मालो मताअ तक़सीम कर दिया, उस में से अपने पास कुछ भी ना रखा, जहांगीर ने आप रहमतुल्लाह अलैह को बहुत बुलाया मगर आप रहमतुल्लाह अलैह नहीं गए।

अजमेर की रवानगी

इसी रात को शेरे ख़ुदा हज़रत अली रज़ीअल्लाहु अन्हु को ख्वाब में देखा कि आप रहमतुल्लाह अलैह को आग़ोशे शफ़क़त में लेकर इरशाद फ़रमाते हैं कि ऐ बेटा! दस्ते क़ुदरत ने तुम्हारी मतलब आवरी ख़्वाजा मुईनुद्दीन

चिश्ती अजमेरी रहमतुल्लाह अलैह के हाथ में रखी है, मुनासिब है कि तुम उनके मज़ार पर हाज़िर हो कर क़ुदरते ख़ुदा का तमाशा देखो, सुब्ह को आप रहमतुल्लाह अलैह ने बेदार हो कर अपना सारा मालो अस्बाब राहे ख़ुदा मे लुटा दिया और एक तहबंद बांध कर और चादर ओढ़ कर दिल्ली की तरफ़ रवाना हुए, चंद रोज़ तक हज़रत क़ुतुबुल अकताब ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह के मज़ारात फ़ाइज़ुल अनवार पर मोतकिफ़ रह कर फुयूज़े बातिनी हासिल किए, आख़िर रोज़ा ए मुक़द्दसा हज़रत ख्वाजा ए ख़्वाजगान ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन संजरी चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह में हाज़िर हो कर दिल में आराम और आँखों में बसीरत पैदा की।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह आलमे मिसाल में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया सैय्यिद ! इतने दिन तुम कहाँ रहे ? एक अरसे से मैं तुम्हारा मुंतज़िर था, हुज़ूर शेरे ख़ुदा, अलीयुल मुर्तज़ा रज़ीअल्लाहु अन्हु की बार बार ताकीद होती थी कि फ़र्ज़ंद अबुल उला को जल्द तलक़ीन करो, आप रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया कि फ़क़ीर को येह तमन्नाए ज़ियाराते मज़ाराते हज़रत क़ुतुबुल अकताब रहमतुल्लाह अलैह व हज़रत महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह तवक़्क़ुफ़ हुआ, अब हुज़ूर मैं हाज़िर हूँ। फिर हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह ने आप रहमतुल्लाह अलैह को कमालाते ज़ाहिरी और बातिनी से मालामाल किया, चंद मुद्दत तक आप रहमतुल्लाह अलैह रोज़ा ए मुनव्वरा में मो’तकिफ़ और रोज़ाना चशमए फ़ैज़ो करामत से सैराब होते रहे, आख़िरे कार हस्बे हुक्म अकबराबाद यानी आगरा वापिस आ कर अपने चचा जान सैय्यिद अमीर अब्दुल्लाह नक़्शबंदी अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हुए।

हज़रते सैय्यिद अमीर अब्दुल्लाह नक़्शबंदी अहरारी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी दुख्तरे नेक अख्तर यानी बेटी से आप रहमतुल्लाह अलैह की शादी कर दी और खिर्क़ा ए ख़िलाफ़तो इजाज़त और शजरए तरीक़त इनायत फरमा कर फ़रमाया :बाबा काम वही है जो तुम करते हो यानी जो नेअमत ख़्वाजा बुज़ुर्गवार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह के दरबार से तुमको अता हुई है वो काफ़ी है, सिमाअ की भी तुमको इजाज़त है लेकिन अश़ग़ालो अज़्कार सिलसिलए आलिया नक़्शबंदिया का भी शुग़ल यानी काम जारी रखना, चुनांचे आपने दोनों सिल्सिलों के अज़्कारो अश़ग़ाल की तरकीब से एक जदीद तरीक़ा यानी ख़ानवादए अबुल उलाईया जारी फ़रमाया।

ऐ आशिक़ाने औलिया! आप रहमतुल्लाह अलैह के खिर्क़े आदात व करामात के बे इंतिहा फूल निसार किया जा सकता है मगर अफ़सोस कि इस किताब के ख़ियाबां तंग और तवालत से ख़ाली हैं, इस के इलावा येह वाक़िआत अज़हर मिनश्शम्स और किताबत की इमदाद से मुस्तग़नी हैं, अज़्कारुल अहरार, हुज्जतुल आरिफ़ीन, कैफ़ीयतुल आरिफ़ीन, अनवारुल आरिफ़ीन, निस्बतुल आशिक़ीन और नजाते क़ासिम वग़ैरा किताबों में आप रहमतुल्लाह अलैह के अक्सरो बेशतर हालात लिखे हुए हैं, शौक़ रखने वाले इन किताबों में मुलाहिज़ा कर सकते हैं।

मौलाना शाह वलीयुल्लाह साहिब मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब अन्फ़ासुल आरिफ़ीन में अपने वालिद बुज़ुर्गवार शाह अब्दुर्रहीम साहिब रहमतुल्लाह अलैह की ज़बानी तहरीर फ़रमाया है कि आप रहमतुल्लाह अलैह के अफ़आल से शरीअत ज़ाहिर थी, क़ौलन और फ़ेअलन कभी आप रहमतुल्लाह अलैह ने ज़र्रा बराबर भी जादए (शरीअते) मुहम्मदी से क़दम बाहर नहीं रखा, आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिब ज़ादे अमीर नूरुल

उला रहमतुल्लाह अलैह से बढ़कर मैंने किसी को रास्त गो यानी सच बोलने वाला नहीं देखा, मुद्दत तक उनकी सोहबत में रहा और कुलाहे मुबारक यानी टोपी और खिरक़ा शरीफ़ से भी मुशर्रफ़ हुआ, एक दिन मैंने उन से दरयाफ्त किया कि लोग कहते हैं कि अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह सिमाअ की तरफ़ बहुत राग़िब थे और जिस किसी की तरफ़ देखते या अपने पान का उगाल इनायत फ़रमाते थे वो बेहोश हो जाता था, जवाब दिया कि मुझे याद नहीं है कि आप रहमतुल्लाह अलैह ने सिमाअ सुना हो मगर चंद बार कि वो भी एक तक़रीब के साथ था, दूसरी बात की निस्बत फ़रमाया कि येह क़ायदा कुल्लिया ना था ख़ुद मैंने बे तादाद मर्तबा आप रहमतुल्लाह अलैह का नीम खुर्दा यानी आधा खाया हुआ पान (उगाल) खाया है, एक मर्तबा आप रहमतुल्लाह अलैह पर फ़ालिज गिरा, मुद्दत तक उस की तकलीफ़ उठाई, ख़ुसूसन वुज़ू या तहारत के वक़्त बहुत ज़्यादा तकलीफ़ होती थी, एक दिन हालते तकलीफ़ में एक शेअर ज़ौक़ो शौक़ से पढ़ना शुरू किया फ़ौरन ऐसा वज्द पैदा हुआ कि उस की हरारत से तमाम आज़ा खुल गए और शाफ़ीए मुतलक़ यानी अल्लाह पाक ने अपने फ़ज़्लो करम से सेहते कामिला अता फ़रमाई।

औलाद

आप रहमतुल्लाह अलैह के दो बेटे हैं:

(1) हज़रत अमीर फ़ैज़ुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह।

(2) हज़रत अमीर नूरुल उला रहमतुल्लाह अलैह।

वफ़ात

71 बरस की उम्र में सह शंबा यानी मंगल के दिन 9 सफ़र 1061 हिज्री को हर्क़तुल बोल के आरिज़े में ताइरे रूह पुर फ़ुतूह ने क़फ़से उंसरी से परवाज़ कर के गुलज़ारे जहां और फ़ज़ाए लामकां की तरफ़ परवाज़ की।

तसनीफ़ात

एक मुख़्तसर रिसाला जो मरातिबे फ़ना और बक़ा के बयान में है और चंद मकतूबात और एक मुख़्तसर सा दीवान आप रहमतुल्लाह अलैह का यादगार है, मज़ारे मुबारक मौज़ूअ लश्करपुर के क़रीब में एक वसीअ चहार दीवारी के दर्मियान में ज़ियारत गाह ख़ासो आम है, इस चहार दीवारी के अंदर दो मस्जिदें, एक सिमाअ ख़ाना, मज़ार मुबारक की सह दरी और आलीशान दरवाज़े के इलावा बड़े बड़े मर्दाने ख़ुदा आसूदा हैं यानी उनके मज़ारात हैं।

हर जुमेरात को ज़ाइरीन का मेला लगता है और सालाना उर्स निहायत धूम धाम और शानो शौकत से होता है, अब तक मज़ार फ़ाइज़ुल अनवार से दरयाए फ़ैज़ जारी है, मज़ार का तावीज़ संगमरमर का है जिस पर سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی लिखा हुआ है, ऊपर संगमरमर की तख़्ती नसब है यानी लगी हुई है, उस पर आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात की तारीख़ लिखी हुई है, जिनकी नक़ल नजाते क़ासिम नामी किताब में मौजूद है, जिस मक़ाम पर दरगाह शरीफ़ वाक़ेअ है यहां शाही ज़माने में एक वसीअ मुहल्ला आबाद था जो सूफ़ी पुरा के नाम से मौसूम था, ख़ास दरगाह के मक़ाम पर आप रहमतुल्लाह अलैह का मकान और ख़ानक़ाहे आलिया बनी हुई थी।

अमीर फ़ैज़ुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह और अमीर नूरुल उला रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह के दोनों साहिबज़ादे और बहुत से ख़ुल्फ़ाए ज़ी वक़ार और मुरीदाने जानिसार का तज़्किरा इस किताब में मौजूद है।

साहिब ज़ादगान के इंतिक़ाल के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह के पोते अमीर ताजुल उला बिन अमीर फ़ैज़ुल उला रहमतुल्लाह अलैह सज्जादा नशीन और दरगाह शरीफ के मुतावल्ली रहे, इन के बाद उनकी साहिब ज़ादी

मुतावल्ली रहीं, उन के बाद उनके बरादर ज़ादा यानी भाई का लड़का मीर मुईनुद्दीन बिन अमीर मुहम्मद सालेह, फिर उन के बेटे मीर अकरमुद्दीन ख़ां, उस के बाद मीर अज़ीजुल्लाह उर्फ़ सैय्यिद मीरन जान व सैय्यिद बदरुद्दीन उर्फ़ मीर बदले दरगाह के मुतावल्ली और सज्जादा नशीन है, 2 ज़ुल हिज्जा 1279 हिज्री से सैय्यिद मीरन जान के नवासे हाफ़िज़ क़मरुद्दीन बेग साहिब सज्जादा नशीन हैं, आराज़ी इहातए दरगाह तादादी 4 बिस्वा ज़मीन सल्फ के ज़माने से बनाम बुज़ुर्गान मौसूफ़ माफ़ यानी वक़्फ़ चली आती है।

बोस्ताने अख़्यार के मुसन्निफ़ 1331 हिज्री के हालात लिखते हैं कि अब हाफ़िज़ साहिब मौसूफ़ बशुमूल आपने भाई रज़ीउद्दीन बैग और बिरादर ज़ादे यानी भाई के बेटे मिर्ज़ा सिराजुद्दीन बैग इब्ने मिर्ज़ा ज़ियाउद्दीन बैग इस ज़मीन के मुआफ़ीदार हैं और तमाम इंतिज़ामाते दरगाह बतौरे ख़ुद करते हैं।

करामात

एक दिन अमीर सैय्यिद अबुल उला रहमतुल्लाह अलैहअपनी ख़ानक़ाह में रौनक अफ़रोज़ थे कि यकायक आप रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत अमीर नूरुल उला रहमतुल्लाह अलैह से फ़रमाया कि कुछ ऐसा मालूम होता है कि शाहजहाँ बादशाह के दरबार में इस वक़्त ख़ूँ रेज़ी हो रही है, थोड़ी देर के बाद नवाब सदाक़त ख़ां के क़त्ल की ख़बर सारे शहर में फैल गई।

हज़रत मुल्ला उमर रहमतुल्लाह अलैह को सिमाअ में कैफ़ीयत हुई उन्होंने उसी हालत में अपनी जाने शीरीं जाने आफ़री के सुपुर्द फ़रमाई, जब उनको आप (यानी हज़रत सय्यिदुना सरकार रहमतुल्लाह अलैह) की ख़िदमत में लाया गया तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने उन पर एक निगाह डाली, मुल्ला उमर उठ कर बैठ गए और फिर हालते वज्द में रक़्स करने लगे।

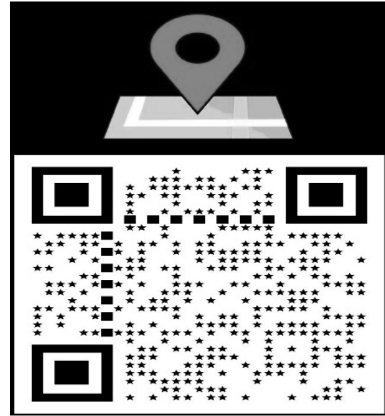
एक बदमस्त हाथी लोगों को परेशान करता था उस के ख़ौफ़ से लोग छुप जाते थे, एक दिन आप रहमतुल्लाह अलैह जामा मस्जिद से ख़ानक़ाह जा रहे थे, आपने शोर सुना, पूछा कि येह शोर क्या है ? मुरीदों ने अर्ज़ किया कि एक बदमस्त हाथी आ रहा है इस से बचने की तदबीर ज़रूरी है किसी गली में जाना मुनासिब है, आप रहमतुल्लाह अलैह ने येह सुनकर फ़रमाया : "बाबा अबुल उला अपनी राह जाता है वो अपनी राह जाएगा" जब वो मस्त हाथी सामने आया आप रहमतुल्लाह अलैह ने उस की तरफ़ बग़ौर देखा, हाथी एक दम रुक कर खड़ा हो गया, आप रहमतुल्लाह अलैह इस बदमस्त हाथी के बराबर से निकल कर चले गए, कुछ दिन के बाद आपको इत्तिला हुई कि वो बदमस्त हाथी ख़ानक़ाह के दरवाज़े पर खड़ा है आप रहमतुल्लाह अलैह उस के पास तशरीफ़ ले गए और उस से फ़रमाया कि मख्लूक़ को परेशान करना अच्छा नहीं, बेहतर येह है कि राजघाट जा कर लोगों को दरिया पार कराओ, वो हाथी राजघाट गया और लोगों को अपनी पीठ पर बिठा कर दरिया पार उतारने लगा कुछ ही दिनों में वो हाथी मीर साहिब का हाथी कहलाया।

एक दिन का वाक़िआ है कि आप रहमतुल्लाह अलैह की मुलाक़ात एक जोगी से जमुना पार हुई, उस जोगी ने एक डिबिया आपको पेश की, आप रहमतुल्लाह अलैह ने जोगी से दरयाफ्त किया कि डिबिया में क्या है ? जोगी ने जवाब दिया कि इकसीर है, इकसीर की खूबी येह है कि एक रत्ती भर ताँबे पर मलने से ताँबा सोना हो जाता है आप रहमतुल्लाह अलैह ने वो डिबिया जमुना में फेंक दी और जोगी से फ़रमाया साधू जी इन्सान तो ख़ुद इकसीर है, ऐसी सूरत में दूसरी इकसीर की तदबीर करना इन्सान की तहक़ीर है, जोगी को रंज हुआ, आप रहमतुल्लाह अलैह से कहने लगा कि अफ़सोस मेरी सारी उम्र की कमाई आपने जमुना में लुटा दी, आप रहमतुल्लाह अलैह ने उस

जोगी से पूछा अच्छा येह बताओ, इकसीर कैसी होती है, जोगी ने जवाब दिया, ख़ाक सी यानी मिट्टी की तरह, फिर आप रहमतुल्लाह अलैह ने जोगी से फ़रमाया: उधर देखो, जमुना की येह रेत सब ख़ाक है जितनी चाहिए ले लो, वो तो एक छोटी सी डिब्बी थी, बड़े शौक़ से डिब्बे भर लो और बे तकल्लुफ़ इस से सोना बना लो, साधू को यक़ीन ना आया फिर भी उसने थोड़ी सी रेत बतौरे आज़माईश के ताँबे पर मली, ताँबा ख़ालिस सोना हो गया, साधू आप की येह करामत देखकर आपका मोतक़िद हो गया।

(बोस्ताने अख़्यार, स15.21)

अमीर सैय्यिद अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(2) **अमीर फैज़ुल्लाह**

आप रहमतुल्लाह अलैह शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के बड़े बेटे, मुरीद, ख़लीफ़ा और सज्जादा नशीन हैं, बोसताने अख़्यार के मुसन्निफ़ की नज़र से एक शाहजहाँ बादशाह का फ़रमान ब तारीख़ 18 रजब 1058 हिज्री गुज़रा है जिस से वाज़ेह होता है कि जामा मस्जिद की तोलिय्यत यानी मुतावल्लियत शाहज़ादी जहां आरा बेगम ने आप रहमतुल्लाह अलैह के सिपुर्द की थी और चार सौ रुपये साल उस के मुआवज़े में आप रहमतुल्लाह

अलैह को दरबारे शाही से मिलते थे, येह फ़रमान हाफ़िज़ क़मरुद्दीन बेग साहिबे सज्जादा नशीन दरगाह सय्यिदुना अबुल उला के पास मौजूद है।

आप रहमतुल्लाह अलैह बड़े आरिफ़ कामिल और शैखे अकमल थे, बड़े बड़े ख़ुल्फ़ाए रफ़ीउश्शान आप रहमतुल्लाह अलैह के हुए हैं 61 साल की उम्र में 29 ज़ुल क़ादा 1081 हिज्री को आपने रिहलत फ़रमाई।

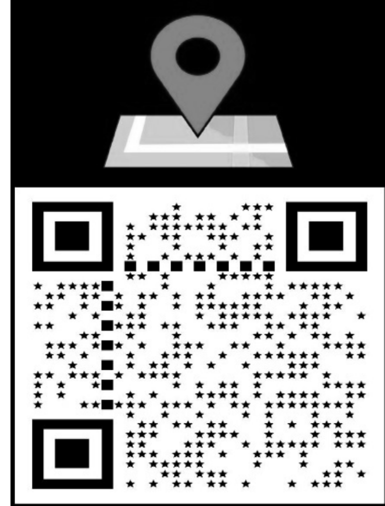
मज़ारे मुबारक अंदर इहातए दरगाह अबुल उलाईया चबूतरा उत्तर पूरब जानिब के गोशे पर वाक़ेअ है।

वफ़ात की तारीख़ ये है

(ज़ेबे जिनाँ ब फैज़ुल्लाह) इस के अदद 1081 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल का हिज्री साल है।

(बोस्ताने अख्यार, स139.140)

अमीर सैय्यिद फैज़ुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(3) अमीर नूरुल उला

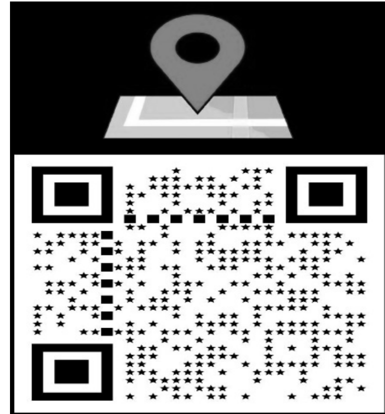
आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के फ़रज़ंद रशीद मुरीद और ख़लीफ़ा हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह इल्मो फ़ज़्ल से

मौसूफ़ और बड़े आबिद व ज़ाहिद बुज़ुर्ग थे, आप रहमतुल्लाह अलैह ने ज़िक्रे नफ़ी व इस्बात को हब्से नफ़्स के साथ कमाल के दर्जे को पहुंचाया।

हज़रत शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब 'अन्फ़ासुल आरिफीन' में अपने वालिदे माजिद अब्दुर्रहीम मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाह अलैह की ज़बानी लिखा है कि मैंने किसी को अमीर नूरुल उला रहमतुल्लाह अलैह से ज़्यादा रास्त गो नहीं देखा, मैं मुद्दत तक उनकी सोहबत में रहा और आप रहमतुल्लाह अलैह के कुलाह मुबारक यानी टोपी और खिर्क़ा शरीफ़ से मुशर्रफ़ हुआ, शैख़ लुत्फुल्लाह साहिबे अज़्कारे अहरार आप रहमतुल्लाह अलैह ही के ख़लीफ़ा थे।

7 रबीउस्सानी 1090 हिज्री को, 73 साल की उम्र में आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई और अपने वालिदे बुज़ुर्गवार हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के पांइती पर आसूदा हैं, मज़ार शरीफ का तावीज़ मुबारक सादा मगर संगमरमर का है। (बोस्ताने अख्यार, पेज235.236)

अमीर सैय्यिद नुरुल उला रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



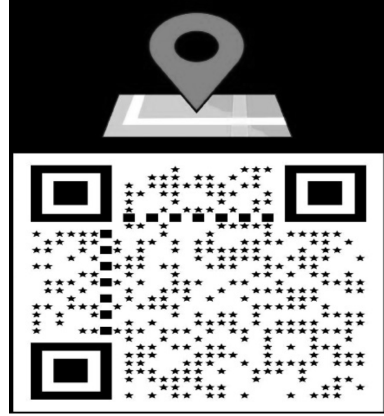
(4) अमीर ताजुल उला

आप रहमतुल्लाह अलैह अमीर फ़ैज़ुल उला इब्ने अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंद, ख़लीफ़ा और सज्जादा नशीन हैं यानी सय्यिदुना

सरकार अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के पोते हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के सर चश्मए फ़ैज़ो इरशाद से एक आलम सैराब हुआ, 15 शाबान 1102 हिज्री को 67 साल की उम्र में आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई।

मज़ार मुबारक हज़रत सय्यिदुना सरकार, अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के पहलू में वाक़ेअ है, मज़ार मुबारक का तावीज़ संगमरमर का है और इस पर आयतुल कुर्सी लिखी हुई है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज61)

अमीर सैय्यिद ताजुल उला रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।

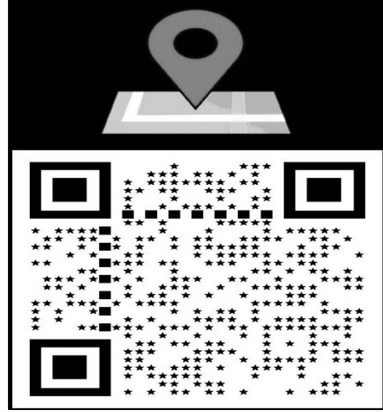


(5) **मुल्ला उमर**

हज़रत मुल्ला उमर रहमतुल्लाह अलैह शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के हम असर हम दम और बाराने बा सफ़ा थे, आप रहमतुल्लाह अलैह की आँखें ख़ुदा शनासी के नूर से मुनव्वर और आपका दिल हर वक़्त ख़ुदा की याद में तस्बीह करता रहता था।

आप रहमतुल्लाह अलैह अपने ज़माने के ज़बरदस्त आलिम थे शरह मुल्ला पर आप रहमतुल्लाह अलैह ने हाशिया लिखा था, मज़ार ग़ालिबन अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह की दरगाह के पास है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज131)

मुल्ला उमर रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(6) **ख़्वाजा फ़ौलाद अबुल उलाई**

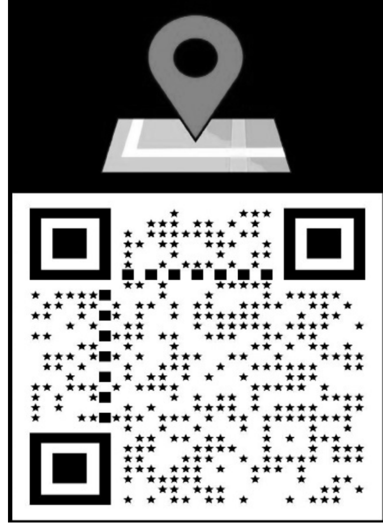
आप का असली नाम ख़्वाजा मुहम्मदी रहमतुल्लाह अलैह है, आप रहमतुल्लाह अलैह शाह अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद, दामाद और बड़े खुलफ़ा में से हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह के कश्फ़ व करामात के हालात अब तक लोगों की ज़बानों पर हैं, आप कमाल जलालो जबरूत रखते थे औरतों को आपके मज़ार पर जाने की क़तई मुमानअत है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** अंदर इहातए दरगाह अबुल उलाईया रहमतुल्लाह अलैह सिमाअ ख़ाना से मुत्तसिल जानिबे शुमालो मग़रिब वाक़ेअ है यानी उत्तर और पच्छिम की जानिब।

(बोस्ताने अख्यार, पेज138.139)

ख्वाजा फौलाद अबुल उलाई रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(7) अमीर सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल अहरारी

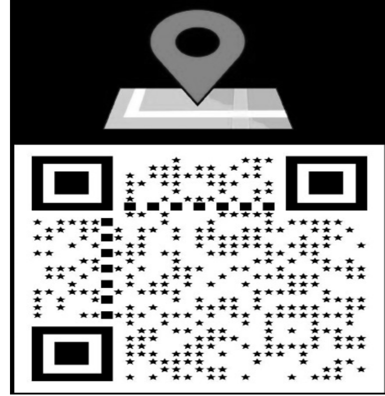
आप ख़्वाजा अमीर अहरारी रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और अकमल खुलफा में से हैं, एक ज़माने को आप से फ़ैज़ पहुंचा, सुख़न गोई में भी आपको ख़ास मलका हासिल था चुनांचे हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की तख्ती पर जो तारीखें लिखी हुई हैं वो आप रहमतुल्लाह अलैह ही के नताइज तबअ का नतीजा हैं यानी आप की लिखी हुई।

81 बरस की उम्र में एक रबीउल अव्वल 1111 हिज्री को आप रहमतुल्लाह अलैह ने आगरा में वफ़ात पाई, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक आस्तानए अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह में नीम के दरख़्त के नीचे वाक़ेअ है, शहनशाह आलमगीर का एक फ़रमान बा तारीख 24 ज़िल क़ादा 5 वे जुलूस राक़िमे बोसतां की नज़र से गुज़रा जिस से वाज़ेह होता है कि ख़िदमते तौलियत मस्जिद अकबराबादी व दरोग़गी दीगर मसाजिद

अकबराबाद व ख़िदमते अदालत शहर अकबराबाद व दरोग़गी रोज़ियाना दारान व सालियाना दारान आपके सिपुर्द थी और मबलग़ पाँच रुपया यौमिया आप रहमतुल्लाह अलैह को ख़िदमात की तनख़्वाह मिलती थी।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज161)

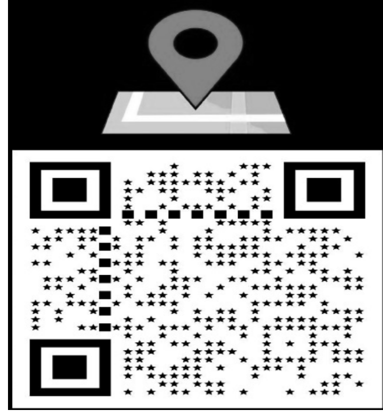
अमीर सैय्यिद मुहम्मद अफ़जल अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार तक पहुँच सकते हैं।



(8) शाह नूरुज़्ज़मान

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने नामवर बुज़ुर्गों में हैं, आपका ज़िक्रे ख़ैर किसी किताब में राक़िम की नज़र से नहीं गुज़रा, मगर अहले शहर को आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक से बहुत अक़ीदत है और आप रहमतुल्लाह अलैह की करामात और बुज़ुर्गी की अक्सर दास्तानें अब तक मशहूर चली आती हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार दरगाह शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह से मिला हुआ ज़ियारत गाह है, हर नवीं रबी उस्सानी को आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स होता है, बाज़ लोग कहते हैं कि आप चिश्तिया, साबरिया सिल्सिला में मुंसलिक हैं, हाजी ए हरमैन शरीफ़ैन और ख़्वाजा ख़ानू ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और ख़लीफ़ा थे, वल्लाहु आ'लम। (बोस्ताने अख़्यार, पेज235)

शाह नुरुज़्ज़मान रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(9) अमीर अब्दुल माजिद

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अमीर अबू नसर के फ़रज़ंदे रशीद यानी बेटे, सैय्यिद अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह की बहन के बेटे, मुरीद और ख़ुल्फ़ाए इज़ाम में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह अंजुमन ख़ुदा शनासी के रुकने आज़म और अपने मामूं और पीर के आशिक़े ज़ार थे।

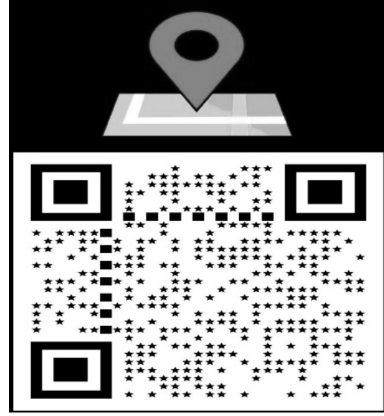
बहुत से लोग सिर्फ आप रहमतुल्लाह अलैह का जमाले बा कमाल देख कर शर्फ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए, बड़े बड़े जलीलुल क़द्र और अज़ीमुश्शान ख़ुलफ़ा आप रहमतुल्लाह अलैह के हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के सीने में शोरिशे इश्क़ की आग भड़का करती थी।

आप रहमतुल्लाह अलैह का इंतिक़ाल भी वज्दो शोरिश ही की हालत में हुआ, **मज़ार मुक़द्दस** पीर साहब की पाईंती पर वाक़ेअ है, जिस के संगमरमर के तावीज़ पर येह शेअर लिखा हुआ है, जो आप रहमतुल्लाह अलैह की वसीयत करने की वजह से लिखा गया था।

चश्मे आँ दम कि ज़ शौक तू नहद सर ब लहद
ता दमे सुब्ह क़ियामत निगरां ख्वाहद बुवद

(बोस्ताने अख्यार, पेज116.117)

अमीर अब्दुल माजिद रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



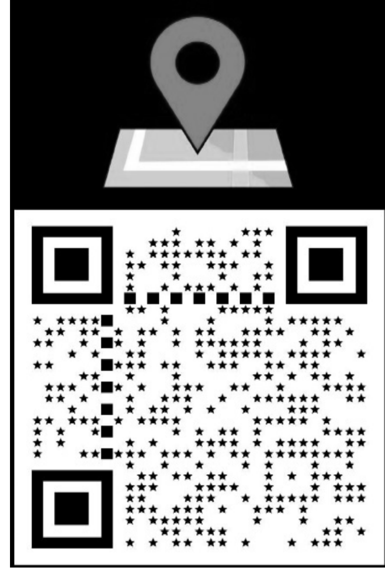
(10) अमीर अब्दुल मुन्ईम

आप रहमतुल्लाह अलैह अमीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के छोटे साहिब ज़ादे हैं, इल्मो फ़ज़्ल से मौसूफ़ और साहिबे रियाज़तो मुजाहिदात थे।

मुकम्मल 30 साल तक हैवानाते जमाली और जलाली और प्याज़ वग़ैरा तर्क कर के तरह तरह की रियाज़तें की थीं, दिन रात वज़ीफ़ा व तस्बीह से सरोकार रखते थे।

आख़िरे कार हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह की नज़रे तवज्जोह से कमाल के दर्जे पर पहुंच गए, **मज़ार मुबारक** ग़ालिबन दरगाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह में है। (बोस्ताने अख्यार, पेज118)

अमीर अब्दुल मुनईम **रहमतुल्लाह अलैह** के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(11) सौफा अला क़ली (अली क़ली)

आप रहमतुल्लाह अलैह शुरू में एक शो'बदा बाज़ जोगी थे, एक ज़मींदार की हसीन व महजबीं बेटी पर आशिक़ हो कर उस को ले उड़े और जादू के ज़ोर से मैना की शक्ल में कर के एक पिंजरे में लिए हुए फिरते थे।

ख़ुश क़िस्मती से आगरा में गुज़र हुआ और शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह के क़रीब से गुज़रे, आप रहमतुल्लाह अलैह ने जोगी जी को देख कर बुला लिया और दो रकअत नमाज़ नफ़्ल पढ़ कर वुज़ू का बचा हुआ पानी पिंजरे पर डाल दिया कि उस के पड़ते ही तमाम जादू बातिल हो गया और वो साहिबे जमाल लड़की अपनी असली हालत पर आ गई।

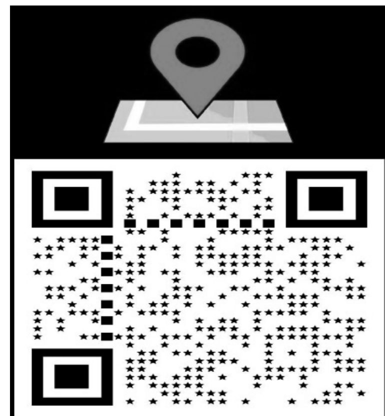
आप रहमतुल्लाह अलैह ने उस लड़की से पूरा हाल पूछ कर के फ़रमाया कि अगर अपने घर जाने की ख़्वाहिश हो तो मैं वहां पहुँचवा दूं, वो दौड़ कर क़दमों पर गिर पड़ी और सिद्क़े दिल से मुसलमान हो गई, जोगी जी भी येह हाल देख कर अपना सब कमाल भूल गए और हज़रत अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के हाथों पर शर्फ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए, आप रहमतुल्लाह अलैह ने दोनों का निकाह कर दिया, दोनों आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीदीने जां निसार में शामिल हो कर मुद्दत तक ख़ानक़ाह शरीफ़ में रहे।

हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह ने जोगी साहिब का नाम सूफ़ी अलाक़ी रखा और चंद ही रोज़ में विलायत के बुलंद मरातिब पर पहुंचा दिया, दोनों के मज़ार दरगाह के इहाते के अंदर मौजूद हैं और जोगी जोगन की ज़ियारत के नाम से मशहूर हैं।

मौलाना शाह वलीयुल्लाह साहिब मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने अन्फ़ासुल आरिफीन में आपकी निस्बत येह जुमला एक मौक़े पर तहरीर फ़रमाया है : अली क़ली अकबराबाद यानी आगरा में आये और हज़रत अबुल उला की नज़र से मशहूर हो गये।

(बोस्ताने अख्यार, पेज129.130)

सौफ़ा अला कली (अली कली) रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार तक पहुँच सकते हैं।



(12) अमीर अब्दुल बासित

आप रहमतुल्लाह अलैह अमीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के बड़े बेटे और हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के चचाज़ाद भाई और साले हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह अपने वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह के इंतिक़ाल के बाद हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हो कर नेअमते बातिन के तालिब हुए, हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह ने एक ही तवज्जोह में आप रहमतुल्लाह अलैह को मंज़िले मक़्सूद पर पहुंचा दिया। यानी आप रहमतुल्लाह अलैह विलायत के मर्तबा पर फ़ाइज़ हो गए, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज95)

बालूगंज (पीली कोठी, खोया मंडी के पास)

(13) मुल्ला वली मुहम्मद अबुल उलाई

आप रहमतुल्लाह अलैह इल्मो फ़ज़्ल से मौसूफ़ और सैय्यिद शाह अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के ख़ुल्फ़ाए आ'ज़म (यानी बड़े खलिफ़ाओं में से) और याराने जांनिसार से थे, जो निस्बत शैख़ नसीरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह को हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह के खलिफ़ाओं में थी वही निस्बत आप रहमतुल्लाह अलैह को सैय्यिद अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के खलिफ़ाओं में हासिल थी।

आलिमे बा अमल, आरिफ़, आशिक़ और उलूम में अहले ज़माना के उस्ताद थे, ख़लीफ़ा अबुल क़ासिम अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह को आप की शागिर्दी और मुरीदी का फख्र हासिल था, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** पक्की सड़क के किनारे मुत्तसिल आबादी मुहल्ला बालूगंज वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज248)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत मुल्ला वली मुहम्मद अबू उलाई रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर जाने का रास्ता येह है कि चील गढ़ चौराहे से बालूगंज पैट्रोल पंप की तरफ़ जाते हुए सीधे हाथ पर पीली कोठी और खोया मंडी के बीच में बिल्कुल रोड के किनारे मौजूद है। मज़ार मुबारक पर एक गूलर का दरख़्त है जो मज़ार पर साया किए हुए है।

मज़ार मुबारक पर लगी हुई तख़्ती में येह इबारत लिखी हुई है:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

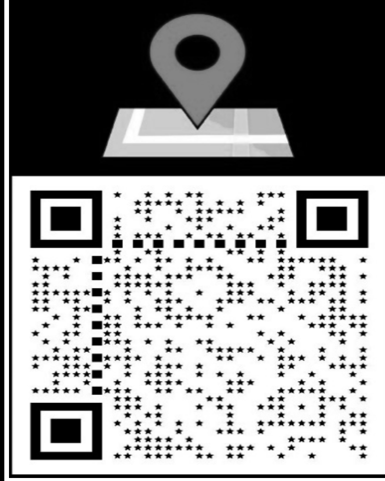
हज़रत मुल्ला वली मुहम्मद साहिब अबू उलाई रहमतुल्लाह अलैह **ख़लीफ़ा अबूल क़ासिम अकबराबादी** रहमतुल्लाह अलैह **को आप** रहमतुल्लाह अलैह **की शागिर्दी और मुरीदी का फ़ख़र हासिल था। आप** रहमतुल्लाह अलैह **का मज़ार मुबारक पक्की सड़क के किनारे मुत्तसिल आबादी मुहल्ला बालूगंज वाक़ेअ है।**

आपका सिन्ने वफ़ात 1099 हिजरी है।

वलीयुल्लाह के मर्क़द से अब तक फ़ैज़ जारी है
ख़ुदा पर मिटने वालों की निशानी देखते जाओ

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक के इहाते में सफ़ैद पत्थर के टुकड़ों का फ़र्श और मज़ार मुबारक के इर्द गिर्द लोहे के तार का जाल और ऊपर लोहे के टीन का शैड लगा हुआ है।

मुल्ला वली मुहम्मद अबुल उलाई रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



बुरहानपुर

(14) क़ारी हाफ़िज़ मुहम्मद सालेह अबुल उलाई

आप रहमतुल्लाह अलैह ख़्वाजा वफ़ा के नाम से मशहूर, बड़े जय्यद हाफ़िज़ और नामवर क़ारी, अमीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और आप रहमतुल्लाह अलैह ही की मस्जिद के इमाम थे जब अमीर अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के इंतिक़ाल का ज़माना क़रीब आया तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह से फ़रमाया कि ख़्वाजा वफ़ा का सुलूक अभी तै नहीं हुआ तुम तै कर देना। चुनांचे अमीर अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के इंतिक़ाल के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह की नज़रे कीमिया असर से अपने मक़सद को पहुंचे और जज़्बात इलाही में मुस्तग़रक़ और बादे वहदत से मस्त और खिरकए ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ हो कर हस्बे हुक्म बुरहानपुर रुख़सत हुए।

वहां बहुत से तालिबाने ख़ुदा को सिराते मुस्तक़ीम का रास्ता दिखा कर मंज़िले मक़्सूद पर पहुंचाया और 14 रबीउस्सानी 1118 हिजरी

को ख़ुद भी बहिश्ते बरीं को रवाना हो गए, आगरा में आप रहमतुल्लाह अलैह की यादगार तामीर कर्दा मस्जिद मौजूद है जो मस्जिद ख़्वाजा वफ़ा के नाम से मशहूर बाज़ार सेब में वाक़ेअ और बख़ूबी आबाद है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज197.198)

(15) मीर सैय्यिद मुहम्मद जाफ़र अबुल उलाई

आप रहमतुल्लाह अलैह शाह अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के ख़ुलफ़ाए अज़ीमुश्शान में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह पर सुक्रो फ़ना की हालत ग़ालिब थी, दो दो रोज़ तक मुराक़बा से सर ना उठाते थे, रास्ते में कभी निगाह ऊपर को ना उठती थी। महफ़िले सिमाअ में पांव में घुन्गरू बांध कर तशरीफ़ ले जाते थे, हालते वज्द में आप रहमतुल्लाह अलैह के घुन्गरू की झन्कार से तमाम मजलिस मस्त हो जाती थी।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज170)

(16) ख़लीफ़ा अबुल क़ासिम अबुल उलाई

आप रहमतुल्लाह अलैह मुल्ला उमर अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के दामाद, और मुल्ला वली मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द, मुरीद व खलीफा हैं और मुल्ला वली मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के खलीफा हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह आलिमे बा अमल, मुतावक्किल, साहिब तक़्वा और अकबराबाद के आलमगीर बादशाह के ज़माने के मशहूर मशाईख़ीन में से हैं,

शाह अब्दुर्रहीम देहलवी रहमतुल्लाह अलैह (जो कि मौलाना शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के वालिद हैं) ने हाफ़िज़ सैय्यिद अब्दुल्लाह नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात के बाद आप

रहमतुल्लाह अलैह की सोहबत से फ़ैज़ हासिल किया था, चुनांचे मौलाना शाह वलीयुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब **'अन्फ़ासुल आरिफीन'** में आप रहमतुल्लाह अलैह का ज़िक्रे ख़ैर कलमबंद फ़रमाया है: कि आप रहमतुल्लाह अलैह पर गुमनामी पसंद ग़ालिब था, तसर्रुफ़ात और करामात भी रखते थे। अल्लाह पाक के ख़ज़ाने के दरवाज़े आप रहमतुल्लाह अलैह पर कुशादा थे, जब हज के वास्ते तशरीफ़ ले गए तो बहुत से मुरीदाने जांनिसार साथ थे, रवानगी के वक़्त एक पैसा भी जेब में मौजूद ना था, जब घर से बाहर निकले एक शख़्स ने चार आना बतौरे नज़र पेश किए, आप रहमतुल्लाह अलैह ने जेब में डाल लिए, वो चार आना वापसी के वक़्त बदस्तूर जेब में मौजूद थे, हरमैन शरीफ़ैन और रास्ते में अजीबो ग़रीब करामात आप रहमतुल्लाह अलैह से ज़हूर में आईं।

हरमैन शरीफ़ैन में एक शख़्स के पास हज़रत ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की कुलाह यानी टोपी मुबारक थी, उस ने हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह को ख्वाब में देखा, गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया: कि येह टोपी अबुल क़ासिम अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के हवाला कर दो। सुब्ह सवेरे वो शख़्स तलाश करता हुआ आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में पहुंचा और ख्वाब का वाक़िआ बयान कर के टोपी और उस के साथ एक क़ीमती जुब्बा बतौरे इम्तिहान आप रहमतुल्लाह अलैह के हवाले किया और कहा कि इस नेमते उज़मा के शुक्रिया में शहर के नेक लोगों की दावत करना चाहिए। आप रहमतुल्लाह अलैह ने जुब्बा को बेच कर के उम्दा और लज़ीज़ खाने पक्वाए और शहर के तमाम नेक लोगों की दावत फ़रमाई।

येह देखकर उस शख़्स को बहुत तअज्जुब हुआ और कहा कि बज़ाहिर आप रहमतुल्लाह अलैह मुतावक्किल हैं और कोई अस्बाबे ज़ाहिरी आप रहमतुल्लाह अलैह के पास मौजूद नहीं है फिर इस क़द्र ज़्यादा खाना आप

रहमतुल्लाह अलैह ने कहाँ से तैयार करवाया ? आप रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया कि जुब्बा बेच कर के दावत की गई है, इस पर उसने शोर और फ़र्याद की कि मैंने इस फ़क़ीर को अहल समझ कर तबर्रुकात दिए थे उसने यूं ज़ाए कर दिए, आप रहमतुल्लाह अलैह ने चुपके से कहा ख़ामोश रह, जो तबर्रुक था यानी टोपी वो मौजूद है और जो तबर्रुक ना था और महेज़ इम्तिहान की ग़रज़ से पेश किया गया था उसे फ़रोख़त कर दिया गया है। येह बात सुन कर वो ख़ामोश हो गया।

मौलाना शाह वलीयुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह ने अपने वालिद अब्दुर्रहीम रहमतुल्लाह अलैह की ज़बानी आप रहमतुल्लाह अलैह की कई करामात **“अन्फ़ासुल आरिफीन”** में तहरीर फ़रमाई हैं जिनके नक़ल की इस किताब में गुंजाइश नहीं है।

माहे रमज़ानुल मुबारक 1089 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह गुलशने रुहानी की सैर को तशरीफ़ ले गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं मिल सका।
(बोस्ताने अख्यार, पेज21.23)

आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए ।
Like Share & Subscribe Channel



हज़रत अमीर अबुल उला के दादा पीर राजघाट (जमना पार)

(17) ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक़्शबंदी

आप रहमतुल्लाह अलैह ख़्वाजा अबुल फ़ैज़ इब्ने ख़्वाजा मुहम्मद अब्दुल्लाह पिसरे कलां ख़्वाजा मुहम्मद अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के दादा पीर हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह जुमला उलूमे अक़्ली व नक़ली ख़ुसूसन तिब्ब व हिक्मत में उस्तादे ज़माना और हफ़्त क़लम की ख़ुश नवेसी में शोहरए आफ़ाक़ थे, तमाम औसाफ़े हमीदा और ख़साइले पसंदीदा से मौसूफ़ और तालिबाने ख़ुदा के रहनुमा थे।

सख़ावतो दरिया दिली का येह आलम था कि जो कुछ जागीर से आता सब ग़रीबों में तक़सीम कर देते थे, 987 हिजरी बमुताबिक़ 1579 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैह को हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत और हज्जे बैतुल्लाह का शौक़ पैदा हुआ, अकबर बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह को मीरे हाज मुक़र्रर कर के और बहुत सा ज़ादे राह देकर निहायत ऐज़ाज़ से रुख़सत किया, हज से फ़ारिग़ हो कर आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा में तशरीफ़ लाए और दरबारे शाही से किनारा कशी कर के बक़ीया उम्र इबादतो रियाज़त में बसर की। आख़िरे कार 12 रबीउल अव्वल 999 हिजरी बमुताबिक़ 1590 ईस्वी को सफ़रे आख़िरत इख्तियार फ़रमाया।

मज़ार मुबारक जमना पार दरिया के किनारे राजघाट के सामने वाक़ेअ है, एक साथ तीन मज़ार हैं। उन में मशरिक़ी मज़ार आप रहमतुल्लाह अलैह का, मग़रिबी मज़ार आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा अमीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह का जो कि हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के

पीर हैं और तीसरा ग़ालिबन आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे ख़्वाजा मुहम्मद ज़करिया रहमतुल्लाह अलैह का है। (बोस्ताने अख्यार, पेज207.208)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह सरताजे आगरा हज़रत अमीर सैय्यिद अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के दादा पीर हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक राजघाट जमना पार है।

जिसका रास्ता बेलनगंज के बिरिज से पार हो कर एत्मादुद्दौला की जानिब जाकर थाना एत्मादुद्दौला आएगा, थाना के सामने से एक रास्ता मज़ार मुबारक के लिए गया है ,अगर रास्ता समझ में ना आए तो थाना के पास किसी से पूछ लें कि दादा पीर की दरगाह का रास्ता कौन सा है?

मज़ार मुबारक निहायत सादा है मगर पुर बहार है, आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के बग़ल में आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा और हज़रत अमीर सैय्यिद अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब हज़रत मीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक भी जलवा लुटा रहा है। एक क़तार में तीन मज़ार हैं, क़िब्ला की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत मीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह की, बीच में आप रहमतुल्लाह अलैह की और पूरब की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह के शहज़ादे ख़्वाजा मुहम्मद ज़करिया रहमतुल्लाह अलैह का है।

उर्स 21,22 ज़िलक़ादा को होता है। नामों की तख़्ती सिरहाने की दीवार में लगी है जिसमें येह लिखा हुआ है:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

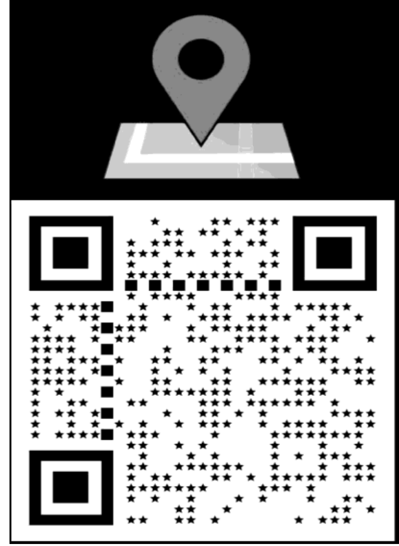
ला इलाहा इल्लल्लाह

तारीखे वफ़ात ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक़्शबंदी अलमारूफ़ दादा पीर रहमतुल्लाह अलैह

12 रबीउल अव्वल 999 हिजरी बमुताबिक़ 1690 ईस्वी

फिर फ़ारसी के तीन अशआर लिखे हैं।

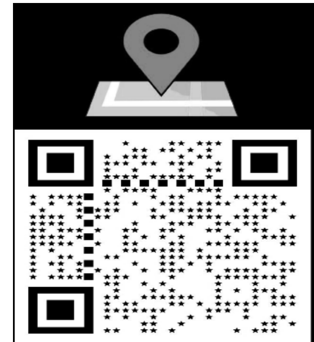
ख्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(18) ख़्वाजा मुहम्मद ज़करिया

आप रहमतुल्लाह अलैह ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे, मुरीदो, ख़लीफ़ा और सज्जादा नशीन हैं निहायत बुज़ुर्ग और बा बरकत शख़्स थे, अपने वालिद बुजुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह क़रीब जमना पारा आराम फरमा रहे हैं । (बोस्ताने अख्यार, पेज170)

ख्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



हज़रत अमीर अबुल उला के पीर

(19) मीर अब्दुल्लाह अहरारी

आप रहमतुल्लाह अलैह ख़्वाजा मुहम्मद यहया इब्ने अबुल फ़ैज़ अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा और हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह अम्मे बुज़ुर्गवार यानी चचा और सुसर और पीर हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह साहिबे विलायत और क़ुतुबे वक़्त थे। अपने कमालात को मुलाज़िमते शाही के पर्दा में पोशीदा कर रखा था, अकबर बादशाह के ज़माने में सबसे पहले दिल्ली के नाज़िम थे।

इस के बाद बुरहानपुर में किसी ख़िदमत पर मामूर हुए। आख़िरे कार मुलाज़िमत यानी नौकरी को छोड़ कर आगरा में तशरीफ़ लाए और गोशा नशीनी इख्तियार की।

23 ज़िलक़ादा को आप रहमतुल्लाह अलैह ने रेहलत फ़रमाई और जमना पार दरिया के किनारे अपने पीर के क़रीब (जानिब मगरिब इस्तिराहत में मसरूफ़ हैं यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** वहीं है। (बोस्ताने अख्यार, पेज98.99)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत मीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह सरताजे आगरा हज़रत अमीर सैय्यिद अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के चचा, सुसर और पीर हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक राजघाट जमना पार है, जिसका रास्ता बेलनगंज के बिरिज से पार हो कर एत्मादुद्दौला की जानिब जाकर थाना एत्मादुद्दौला आएगा, थाना के सामने से एक रास्ता मज़ार मुबारक के लिए गया है, अगर रास्ता समझ में ना आए तो थाना के पास किसी से पूछ लें कि दादा पीर की दरगाह का रास्ता कौन सा है ?

मज़ार मुबारक निहायत सादा है मगर पुर बहार है, मज़ार मुबारक के ऊपर टीन शैड लगा हुआ है, दो दरख़्त मज़ार पर साया किए हुए हैं, एक पुरानी और बावक़ार मस्जिद और मेहमान ख़ाना भी मौजूद है । मज़ार मुबारक की देख भाल करने के लिए दरगाह के इहाते में कई लोग रहते हैं।

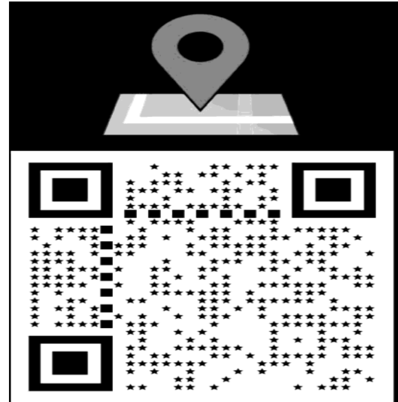
आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के बग़ल में आप रहमतुल्लाह अलैह के पीर हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक भी जल्वे लुटा रहा है। एक क़तार में तीन मज़ार हैं क़िब्ला की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह का, बीच में आप रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब रहमतुल्लाह अलैह का और पूरब की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब के शहज़ादे ख़्वाजा मुहम्मद ज़करिया रहमतुल्लाह अलैह का है।

उर्स 21,22 ज़िलक़ादा को होता है। नामों की तख़्ती सिरहाने की दीवार में लगी है जिसमें येह लिखा हुआ है:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हुज़ूर पुरनूर क़ुतुबुल अबरार सैय्यिदुना मौलाना हज़रत अमीर अब्दुल्लाह अहरारी नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह

ख्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



लश्कर पुर

(20) सूफ़ी हुसैन ख़ां शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मौज़ा लश्कर पुर में साहिबे जज बहादुर की कोठी के इहाते में वाक़ेअ है जिस पर 1081 हिजरी शहादत का साल लिखा हुआ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज73)

कर्बला(आगरा)

(21) बब्बू शाह मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह बड़े साहिबे बातिन और मस्त मज्ज़ूब थे, जिनकी ज़ियारत से राक़िमे बोसतान (अल्लामा सईद अहमद) भी मुशर्रफ़ हुआ है, मुहल्ला सूई कटरा में शैख़ अली बख़्श मरहूम उर्फ़ नन्हे भाई के मकान पर रहा करते थे, रास्ते के किनारे नशिस्त रहती थी, अच्छी ख़बरें कम और बुरी ख़बरें ज़्यादा आपकी ज़बान से निकला करती थीं जो फ़ौरन तीर ब हदफ़ साबित होती थीं यानी वैसा ही होता जैसा आप कहते थें, इसी वजह से लोगों ने ख़ौफ़ के मारे वो रास्ता चलना बंद कर दिया था और काला नाग आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम रख दिया था।

हज़ारों अजीबो ग़रीब करामात आप रहमतुल्लाह अलैह की मशहूर और देखी हुई और सुनी हुई लोग बयान करते हैं, नन्हे भाई मरहूम ने तमाम उम्र आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत की और बावजूद फ़ारिगुल बाल यानी अमीर होने के महज़ आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत और आप से फ़ैज़ हासिल करने के शौक़ में शादी नहीं की।

और मरज़ुल मौत में इसी उम्मीद पर एक दम के वास्ते भी किसी वक़्त जुदा नहीं हुए, जब विसाल का वक़्त क़रीब आया आप रहमतुल्लाह अलैह ने

इरशाद फ़रमाया: कि भय्या जी! जामा मस्जिद तक हो आ, लेकिन नन्हे भाई दो मर्तबा के हुक्म पर भी पास से नहीं हटे, तीसरी मर्तबा बुलंद आवाज़ से फिर वही फ़रमाया, इस पर बेचारे ना चाहते हुए जामा मस्जिद की तरफ़ भागे, उनका जाना था कि 25 साल की उम्र का एक नौजवान कमली पोश फ़क़ीर दरवाज़े पर झाँका, मोहल्ले के बहुत से लोग पास बैठे हुए थे, बावजूद इस के कि दस्तों की वजह से मुद्दत से आप साहिबे फ़िराश यानी चारपाई पर लग चुके थें और बैठने तक से मजबूर थे, मगर उस फ़क़ीर को देखते ही पास बुलाया और फ़ौरन अपनी ताक़त से खड़े हो कर उसे बग़ल में दबा लिया, फिर दो तीन मिनट के बाद छोड़ दिया, फ़क़ीर अपनी राह गया, उस का मुड़ना था कि आप रहमतुल्लाह अलैह ने दुनिया से मुँह मोड़ा और फ़ौरन ताइरे रूह परवाज़ कर गया।

तमाम हाज़िरीन येह माजरा आनन फ़ानन में देखकर अंगुश्त बदंदाँ और महवे हैरत रह गए, नन्हे भाई दौड़ते हाँपते जामा मस्जिद से आए, यहां आकर येह रंग देखा, सर पकड़ कर देर तक रोते रहे, आख़िरे कार जिस्मे ख़ाकी को कर्बला में ले जा कर सुपुर्दे ख़ाक किया और चंद मुद्दत बाद ख़ुद भी इस रंज और सदमे में चल बसे। (बोस्ताने अख्यार, पेज, 59.60)

(22) सैय्यिद हुसैन

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ नसीरुल्लाह इब्ने शैख़ अब्दुल वाहिद रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे और शाहजहाँ बादशाह के ज़माने के मशाईख़ीने साहिबे असरार में से थे, 1064 हिजरी में आप ने विसाल फ़रमाया।

वफ़ात की तारीख़ येह है :

आरिफ़े बे नज़ीर शैख़ हुसैन
मुर्शिदो पीरो हादी युस्सक़लैन
साल नक़ालश ख़िर्द चू गो हर सफ़त

ब हसीन अस्त ज़ेबे जन्नत गुफ़्त

मज़ार मुबारक करबला में इम्दादुल मकादिर बाग़ के अंदर एक गुंबद के नीचे मौजूद है, मज़ार का तावीज़ संग मरमर का है जिस पर संग़े मूसा की पच्चे कारी से {नाम मुबारक दवाज़ा इमाम सलवातुल्लाह अलैहिम अजमईन} और पायतीं पर {बंदा ए आसी क़ाज़ी सैय्यिद हुसैन 1064 हिजरी} लिखा हुआ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज73)

(23) शाह नमद पोश बरहना

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद यानी आगरा के बुज़ुर्गाने दीन में से हैं, आपके हालात का कुछ भी पता नहीं चल सका, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** कर्बला में मौजूद है, आप रहमतुल्लाह अलैह की औलाद में से मीर सैय्यिद शाह रहमतुल्लाह अलैह और उनकी बहन फ़ैज़ बेगम हैं उनका मज़ार भी कर्बला में मौजूद है। (बोस्ताने अख्यार, पेज88)

(24) मीर सैय्यिद शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह शाह नमद पोश बरहना रहमतुल्लाह अलैह की औलाद में से हैं, **मज़ार मुबारक** कर्बला में एक हुजरे के अंदर मौजूद है जिसमें आप रहमतुल्लाह अलैह की हमशीरा यानी बहन फ़ैज़ बेगम और आप आराम फरमा हैं, हुजरे के जुनूबी यानी दख्खिनी दरवाज़े पर येह कतबा नसब है यानी लगा हुआ है :

फ़ैज़ बेगम आंकि दर ख़ूबी नज़ीर ऊ नबूद
दर महे शव्वाल चूँ रिहलत अज़ीं आलम नबूद
गुफ़्त हातिफ़ साले फ़ौत आँ अफ़ीफ़ा ईं क़दर
मुक़द्दम ऊ आबरूए अहले जन्नत शुद फ़ज़ूद

ब तारीख़ हज़्दहुम माहे शव्वाल 1197 हिजरी फैज़ बेगम फ़ौत शुद, फ़ैज़ बेगम व मीर सैय्यिद शाह बाहम ख्वाहर व बिरादर बू दंद, हुवल क़ादिर।

माहे ज़ी कादा अज़ क़ज़ाए इलाह
चूँकि शुद फ़ौत मीर सैय्यिद शाह
गुफ़्त हातिफ़ ब मर्गश अज़ सरे दर्द
ब जिनां बाद रोज़ीश मस्वाह

ब तारीख़ अव्वल माह ज़ीकादा 1197 हिजरी मीर सैय्यिद शाह फ़ौत शुद, औलाद शाह नमद पोश बरहना।

(बोस्ताने अख्यार, पेज85)

(25) मौलवी सैय्यिद वारिस अली

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद यानी आगरा के फ़रज़ंद रशीद हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के आबाओ अज्दाद यानी बाप दादा सादात यानी सैय्यिद सहीहुन्नसब और काकोरी के बाशिंदे थे, इल्मो फ़ज़्ल और ओहदा ए क़ज़ा के साथ पीरी मुरीदी का सिल्सिला मुद्दत से ख़ानदान में चला आता था, येह पता नहीं चला कि आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिद बुज़ुर्गवार आगरा में किस सिल्सिले से रौनक अफ़रोज़ थे, बहरे हाल आप रहमतुल्लाह अलैह ने आगरा के मोहल्ले ज़ैन ख़ाना में आलमे ग़ैब से ज़हूर फ़रमाया यानी पैदा हुए।

जिस लाड़ प्यार से आप रहमतुल्लाह अलैह की परवरिश हुई, वो इस बात से ब ख़ूबी ज़ाहिर होती है कि चार बरस की उम्र तक आप रहमतुल्लाह अलैह गोद से नहीं उतरे, इसी का नतीजा था कि आप रहमतुल्लाह अलैह बावजूद मज़बूत जिस्म वाले और बुलंद क़ामत यानी लंबे होने के लिथड़ा कर चला करते थे।

शुरुआती तालीम व तर्बियत आला पैमाने पर हुई और अरबी ज़बान की तालीम बतौरे मादरी ज़बान के दी गई, फ़ारसी, उर्दू घर की ज़बान थी, अरबी, अंग्रेज़ी में भी ज़रूरत के मुवाफ़िक़ आप रहमतुल्लाह अलैह ने आला

तालीम पाई, ख़ुसूसन रियाज़ी यानी मैथ व हैयत यानी ईस्टरोनोमी में तो ऐसा कमाल हासिल किया कि शोहरा ए आफ़ाक़ हुए, इब्तिदाई ज़माने में कुछ मुद्दत तक आपने विक्टोरिया स्कूल में मास्टरी भी की थी।

आप रहमतुल्लाह अलैह राक़िमे बोसतान (अल्लामा सईद अहमद मरहरवी)के मख़्दूमे ख़ास थे, मगर येह उम्मीद ना थी कि आपके हालाते ज़िंदगी के तहरीर की ज़रूरत इस क़द्र जल्द पड़ेगी, लिहाज़ा कभी आप रहमतुल्लाह अलैह से इब्तिदाई हालात के मुतअल्लिक़ गुफ़्तगु नहीं आई।

अफ़सोस कि मौत के ज़बरदस्त हाथों ने ख़िलाफ़े उम्मीद आप रहमतुल्लाह अलैह को हमसे इस क़दर जल्द जुदा कर दिया कि जो बातें तीन बरस पहले ख़ुद आपकी ज़बाने मुबारक से सुन सकते थे वो आज बावजूद कोशिशो तलाश के भी मालूम ना कर सके।

आप रहमतुल्लाह अलैह में ऐसा जज़्बा पैदा हो गया था कि चलते फिरते, उठते बैठते घंटों मुराक़बे की हालत में रहते थे, इस हालत में ख़्वाह कैसा ही हक़ीक़ी दोस्त क्यों ना मिलता, कभी उस की तरफ़ मुतवज्जेह ना होते थे ग़र्ज़ कि मज्ज़ूबे साकित के तमाम औसाफ़ आपकी ज़ात में मौजूद थे, नमाज़े ज़ाहिरी से आज़ाद लेकिन रोज़े के इस क़द्र पाबंद थे कि अय्यामे ज़ईफ़ी यानी बुढ़ापे के दिनों और बीमारी में भी ना छोड़ते थे, आप रहमतुल्लाह अलैह की रात की हालत ऐसी राज़ सर बस्ता थी कि जिसका राज़ हर वक़्त के हम नशीनों पर भी अख़ीर दम तक ना खुला।

तमाम अय्यामे हयात में जहां जहां रहे रात के वक़्त हमेशा तने तन्हा रहे, ग़ालिबन एक रात भी ऐसी नहीं होगी कि आप रहमतुल्लाह अलैह किसी के साथ एक कमरे बल्कि एक मकान में रहे हों, जहां रहते मकान की कुंडी बंद करने के बाद ख़्वाह कैसा ही यार, दोस्त पुकारे, कैसा ही ज़रूरी काम क्यों ना पेश आए कभी कुंडी ना खोलते थे और अगर कभी मजबूर हो कर खोल भी

देते थे तो ख़ुद दूसरी जगह चले जाते थे, हर चंद यार दोस्तों ने इस राज़ से पर्दा उठाने की कोशिश की मगर दमे वापसी तक येह राज़ सर बस्ता ही रहा, जब किसी ने ज़्यादा इसरार किया तो सिर्फ येह जवाब देकर टाल दिया कि घर और गौर (क़ब्र) का अलैहिदा होना ही अच्छा है।

ग़ालिबन वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह की हयात में आप रहमतुल्लाह अलैह मुताहिल हो गए थे लेकिन मुद्दत से क़तए तअ़ल्लुक़ात कर लिए थे, आपकी रहमतुल्लाह अलैह बीवी साहिबा और एक साहिबज़ादा सैय्यिद ज़हूर अली मौजूद और जयपुर में मुलाज़िम हैं, बीवी, बच्चे से मिलना क्या मा'ना उन के ज़िक्र तक से गुरेज़ करते यानी बचते थे।

आपका रहमतुल्लाह अलैह वो कारनामा जिससे आइन्दा नस्लों में आप रहमतुल्लाह अलैह का नामे नामी नेक नामी के साथ हमेशा ज़िंदा रहेगा, आप रहमतुल्लाह अलैह की तसानीफ़ो तालीफ़ात का सिल्सिला है, चूँकि आप रहमतुल्लाह अलैह की तबीअत फ़ितरतन इख़्फ़ा दोस्त वाक़ेअ हुई थी, आप रहमतुल्लाह अलैह को शौहरत से नफ़रत और गुमनामी से उल्फ़त थी, बीसियों किताबें, सैकड़ों आला दर्जे के मज़ामीन बिला नाम या दूसरों के नाम से शाएअ़ करा दिए, जिसको निगारंदए बोसतान (यानी सईद अहमद मरहरवी) को ज़ाती इल्म है, यही वजह है कि आज आप रहमतुल्लाह अलैह की तसानीफ़ की मुकम्मल फ़ेहरिस्त पेश करना ना सिर्फ मुश्किल बल्कि ना मुम्किन है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का क़लम मशीन की तरह बराबर चलता रहता था, आखिरी उम्र में भी जबकि आप रहमतुल्लाह अलैह मुतवातिर यानी लगातार बीमारियों की वजह से निहायत कमज़ोर हो गए थे, हाथ में राशा पैदा हो गया था, तबीबों और डाक्टरों ने किसी किस्म की दिमाग़ी मेहनत की क़तई मुमानअत कर दी थी मगर आप रहमतुल्लाह अलैह का हाथ ना रुकता था, अगरचे राशे की वजह से देर में लिखा जाता था मगर हमेशा क़लम बरदाश्ता और

ख़त्ते नस्तालीक़ लिखते थे, आपका क़लम क़लमे वही का मुक़ल्लिद था कि जो एक मर्तबा निकल गया वो पत्थर की लकीर हो गया, लिख कर वो दोबारा पढ़ना जानते ही ना थे और वाक़ई कुछ ऐसा कमाल हासिल था कि एक नुक़्ते की भी ग़लती ना रहती थी, यहां तक कि अंग्रेज़ी से उर्दू या उर्दू से अंग्रेज़ी में तर्जमा करने में भी येह ही हालत थी, मुश्किल से मुश्किल अंग्रेज़ी किताबों या मज़ामीन का तर्जमा इस नफ़ासत और ख़ूबी से क़लम बरदाश्ता लिखते जाते थे कि बड़े बड़े काबिल बी, ए और एम, ए महवे हैरत हो कर आप रहमतुल्लाह अलैह का मुँह तका करते थे।

सबसे पहले आप रहमतुल्लाह अलैह ने रियाज़ी यानी मैथ के चंद रिसाले कलमबंद फ़रमाए जो उस्ताद के नाम से शाएअ़ हुए, उस के बाद कई बरस तक आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के मशहूरो मरहूम अख़बार **इस्लामे आगरा** के ऐडीटर रहे जिन लोगों की निगाह से उस अख़बार के पुर ज़ोर मज़ामीन गुज़रे हैं वो आज तक उस को याद करते हैं, 1892 ई से 1898 ई तक एक बेनज़ीर जंतरी **तक़वीमे हुसैनी** के नाम से आप रहमतुल्लाह अलैह मुरत्तिब करते रहे जो 1897 ई तक मतबए अकबरी से शाएअ़ होती रही और 1898 ई की क़लमी लिखी हुई दफ़्तर मतबए अकबरी में मौजूद है।

अक्सर जंतरियाँ उस मतबए में मौजूद हैं जिनमें शहर के रोज़ाना के वाक़िआत आपके हाथ के लिखे हुए हैं, रिसाला नई रौशनी के भी जो एक आलिमाना मैगज़ीन था आप रहमतुल्लाह अलैह एडीटर रहे, रिसाला **मैडीकल जनरल आगरा** जो एक डाक्टरी रिसाला था मुद्दत तक आप रहमतुल्लाह अलैह के ज़ेरे एहतिमाम व इमदाद यानी मदद से निकलता रहा, आप रहमतुल्लाह अलैह की सबसे मशहूर और ज़ख़ीम किताब **शम्सुत्तवारीख** है जिसके पहले हिस्से में हुज़ूर रसूले मक़बूल ﷺ और आप ﷺ के ख़ानदान के मुफ़स्सल वाक़िआत, मोजज़ात, ग़ज़वात वग़ैरा, दूसरे तीसरे हिस्से में ख़लीफ़ए

अव्वल, दोम के ख़िलाफ़त के ज़माने के वाक़िआत निहायत सलेस उर्दू और सल्फ़ सालिहीन के तर्ज़ पर क़लमबंद किए हैं, यकुम मुहर्रम 1317 हिजरी को उस की बिस्मिल्लाह हुई थी, येह किताब **मत्बउन्नूर आगरा** से शाएअ हो कर बेइंतिहा मक़बूल हुई, जब आप रहमतुल्लाह अलैह ख़लीफए दोम हज़रत फ़ारुके आज़म रज़ी अल्लाहु अन्हु के हालात क़लमबंद फरमा चुके तो अरकाने मत्बअ़ ने बक़िया ख़िलाफ़ते राशिदा के हालात लिखने की फ़र्माइश की मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ने बावजूद इसरार इन्कार किया और फ़रमाया कि अब मैं आगे क़लम नहीं उठा सकता, मुम्किन है कि सहाबए किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन के बाहमी झगड़ों में मेरे क़लम से किसी की शान में कोई ख़िलाफ़ कलिमा निकल जाये जो मेरी आख़िरत की ख़राबी का बाइस हो।

शम्सुत्तवारीख के अलावा सानिहा ए कर्बला, मारका ए कर्बला, जंग रूसो जापान, रिसाला अरूज़, हैरत, वग़ैरा कई किताबें आप रहमतुल्लाह अलैह की और भी तबअ़ हो कर शाएअ़ और क़बूले ख़ासो आम हो चुकी हैं, उनके इलाक़ा तर्जमा **शम्सुल फ़राइज़** मुअल्लफ़ा मौलवी शम्सुद्दीन ख़ान, हिदायतुन्नहव, मक़तलुल अदब, बिदायतुल अदब फ़ी लिसानिल अरब, रिसाला सर्फ़, रिसाला नहव, वग़ैरा चंद सर्फ़ो नहव के 21, वर्क़ के रिसाले जो जनवरी और फरवरी 1897 ई के लिखे हुए हैं कुतुब ख़ाना **मुहम्मदिया आगरा** में क़लमी नुस्खे मौजूद हैं उन के छपने की नौबत नहीं आई।

दो तीन किताबों की तालीफ़ की आप रहमतुल्लाह अलैह को तमाम उम्र तमन्ना रही, उनमें पहली किताब क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर है जिसे आप रहमतुल्लाह अलैह एक जदीद तर्ज़ पर निहायत ख़ूबसूरत और आला पैमाना पर लिखना और छपवाना चाहते थे और उस के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सा ज़ख़ीरा फ़राहम कर के दो तीन पारों की तफ़्सीर लिख भी चुके थे उनमें पहले पारे की तफ़्सीर कुतुब ख़ाना **मुहम्मदिया आगरा** में मौजूद है और दूसरी किताब

जिसके ख़्यालात आपके दिल में हमेशा मोजज़न रहे, एक **इस्लामी क़ामूसुल उलूम** इन्साईक्लो पीडीया की तालीफ़ थी और तीसरी किताब जिसकी तबअ़ का आपको बहुत ही इश्तियाक़ था मुंशी मुईनुद्दीन साहिब की किताब **तारीख़े आगरा** थी जिसके बाज़ मज़ामीन ख़ुद आपके लिखे हुए थे।

तसनीफ़ो तालीफ़ के इलावा आप रहमतुल्लाह अलैह का तमाम वक़्त दर्सो तदरीस में सर्फ होता था, अरबी, फ़ारसी, उर्दू, अंग्रेज़ी ख़ुसूसन रियाज़ी यानी मैथ बहुत कसरत से लोग आप रहमतुल्लाह अलैह से पढ़ा करते थे, अक्सर कॉलिजों के आला दर्जों के तालिबे इल्म भी आप रहमतुल्लाह अलैह से रियाज़ी सीखा करते थे, शुरूअ़ में आप रहमतुल्लाह अलैह बिल्कुल मुफ़्त पढ़ाया करते थे लेकिन आख़िर में कुछ लोगों से उजरत क़बूल फरमा लेते थे, आगरा में हज़ारहा आप रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द मौजूद हैं, जो सब आप रहमतुल्लाह अलैह की तालीम व बरताव के मद्दाह यानी तारीफ करने वाले हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह छोटे बड़े सब शागिर्दों से निहायत मुहब्बतो उल्फ़त से पेश आते और सबको यार के लक़ब से मुख़ातब फ़रमाया करते थे, तीन तीन, चार चार वक़्त भूके रहते लेकिन कभी दिल तंग ना होते, ना ज़बान पर शिकवे शिकायत के कलिमात लाते थे।

वफ़ात से एक हफ़्ता पहले आप रहमतुल्लाह अलैह मुंशी फ़ैज़ अहमद साहिब इन्सपैक्टर के हमराह यानी साथ एक मौलूद शरीफ़ की तक़रीब में क़स्बा महाबन तशरीफ़ ले गए थे, एक हफ़्ता क़ियाम का इरादा था, मगर दो तीन दिन के बाद यकायक आप रहमतुल्लाह अलैह की तबीअत में एक ख़ास इन्क़िलाब पैदा हुआ और ख़िलाफ़े आदत वापसी की जल्दी की, हर चंद इसरार किया मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ना ठहरे और तने तन्हा आगरा वापिस आ गए, यहां आकर उसी दिन मर्ज़े फ़ालिज में मुब्तला हुए, दोस्त अहबाब ने हर चंद इलाज में कोशिश की मगर चूँकि पैमाना ए हयात लबरेज़ हो चुका

था लिहाज़ा कोई कोशिश कारगर ना हुई और सनीचर के दिन दसवीं रबीउस्सानी 1327 हिजरी को 70 या 75 बरस की उम्र में आप रहमतुल्लाह अलैह इस आलमे फ़ानी से राहीये बहिश्ते बरीं हुए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार कर्बला में एक मस्जिद और पक्के कुवें के क़रीब मौजूद है, लौहे मज़ार पर मुंशी फ़ैज़ अहमद साहिब ने येह तारीख़ लिखवा दी है :

जानिबे जन्नत गए वारिस अली
ख़ूब पाया फ़ज़्ले बारी से उरूज
दस रबीउस्सानी और शंबे का दिन
हाथ आया दीन दारी से उरूज

(बोस्ताने अख्यार, पेज236.246)

मुरत्तिब की किताबों का तआरुफ़

स	किताब का नाम	ज़बान	पेज
1	दीने इस्लाम की खूबियाँ	उर्दू	80
2	दीने इस्लाम की खूबियाँ	हिन्दी	80
3	असरारूल ईमान फ़ी हकाईकुल अरकान	उर्दू	423
4	असरारूल ईमान फ़ी हकाईकुल अरकान	हिन्दी	423
5	मेरी सुन्नत मेरी उम्मत	उर्दू	231
6	मेरी सुन्नत मेरी उम्मत	हिन्दी	231
7	क्या हाल है ?	उर्दू	220
8	क्या हाल है ?	हिन्दी	220
9	मौत के वक़्त	उर्दू	282
10	मौत के वक़्त	हिन्दी	282
11	अकाइद की हिकमतें	उर्दू	153
12	अकाइद की हिकमतें	हिन्दी	153
13	पाँच नमाजों की हिकमत	उर्दू	152
14	पाँच नमाजों की हिकमत	हिन्दी	152
15	सब से पहले सब से आखिर	उर्दू	276
16	सब से पहले सब से आखिर	हिन्दी	276
17	क़ुसूर किस का ?	उर्दू	64
18	क़ुसूर किस का ?	हिन्दी	64
19	निसाब मसाइले नमाज़	उर्दू	80
20	आसान हनफ़ी नमाज़	हिन्दी	96
21	आसान फ़र्ज़ उलूम	उर्दू	696
22	आसान फ़र्ज़ उलूम	हिन्दी	696
23	आसान खुत्बाते मुहर्रम	उर्दू	720

24	आसान खुत्बाते मुहर्रम	हिन्दी	720
25	आला हज़रत का चर्चा रहेगा	उर्दू	32
26	आला हज़रत का चर्चा रहेगा	हिन्दी	32
27	ईद मीलादुन्नबी क्यों और कैसे ?	उर्दू	165
28	ईद मीलादुन्नबी क्यों और कैसे ?	हिन्दी	165
29	मुहम्मद और अहमद के राज़	उर्दू	160
30	मुहम्मद और अहमद के राज़	हिन्दी	128
31	मदीने जाना क्यों ज़रूरी है ?	उर्दू	276
32	मदीने जाना क्यों ज़रूरी है ?	हिन्दी	276
33	चाँद की गवाही	उर्दू	64
34	चाँद की गवाही	हिन्दी	64
35	कुर्बानी की तारीख और हिकमतें	उर्दू	112
36	कुर्बानी की तारीख और हिकमतें	हिन्दी	112
37	आँखों का तारा नामे मुहम्मद	उर्दू	176
38	आँखों का तारा नामे मुहम्मद	हिन्दी	160
39	आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	उर्दू	592
40	आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	608
41	फतेहपुर सीकरी की तारीख	उर्दू	208
42	फतेहपुर सीकरी की तारीख	हिन्दी	208
43	आगरा की तारीख	उर्दू	400
44	आगरा की तारीख	हिन्दी	400
45	हिन्दुस्तान को मुस्लिम बादशाहों के तोहफे	उर्दू	208
46	हिन्दुस्तान को मुस्लिम बादशाहों के तोहफे	हिन्दी	208
47	शबान और शबे बराअत	उर्दू	50
48	शबान और शबे बराअत	हिन्दी	50
49	कुरआनी सूरतों के मज़ामीन	उर्दू	435

50	खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 1	उर्दू	477
51	खुत्बाते मुस्तफाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 1	उर्दू	464
52	खुत्बाते मुस्तफाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 2	उर्दू	382
53	खुत्बाते मुस्तफाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 3	उर्दू	382
54	तदरीस के 26 तरीक़े	उर्दू	400
55	रफीकुत्तदरीस	उर्दू	376
56	तारीख साज़ शख्सियत बनने के फॉर्मूले	उर्दू	135
57	फैज़ाने कुरआन कोर्स	उर्दू	256
58	फैज़ाने शरीअत कोर्स	उर्दू	700
59	मा फ़्आलल्लाहु बिका	उर्दू	288
60	तन्ज़ीमी निसाब व बयानात	उर्दू	528
61	उम्मते मुहम्मदिया के सुवालात	उर्दू	145
62	दुरूद की हिकमतें	उर्दू	98
63	चन्दा करने के फॉर्मूले	उर्दू	147
64	शफीकुल मिस्बाह शरह मराहुल अरवाह	उर्दू	402
65	शफ़ीकिया शरह अरबइने नवाविया	उर्दू	190
66	शाफ़िकुन्नहव लिहल्लि खुलासतुन्नहव हिस्सा1	उर्दू	200
67	शाफ़िकुन्नहव लिहल्लि खुलासतुन्नहव हिस्सा2	उर्दू	200
68	अल कौलुल अज़हर शरह फ़िक़्हे अकबर	उर्दू	192
69	शारीकुल फलाह शरह नूरुल इज़ाह	उर्दू	717
70	खलीलिया शरह मुनाज़रा रशिदिया	उर्दू	300
71	कलामुल विकाया शरह शरहुल विकाया जिल्द1	उर्दू	372
72	सर्फ के दिलचस्प सुवालात	उर्दू	375
73	गुलशने वजाइफ़	उर्दू	64
74	इफ़्तिखारे नक़िय्यह अल मारुफ़ फ़र्ज़नदाने आगरा	उर्दू	300
75	खतमे कुरआन की फ़ज़ीलत और मसाइल	उर्दू	32

76	सरताजे आगरा और 29 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	64
77	ताजगंज के 12 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	48
78	लोहामंडी के 12 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	48
79	हींगमंडी और नाईमंडी के 17 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	64
80	सिकंदरा व अतराफ़ के 14 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
81	सराये ख्वाजा व अतराफ़ के 6 औलिया की सीरत	हिन्दी	32
82	शाहगंज व अतराफ़ के 13 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
83	बेलनगंज व अतराफ़ के 29 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	64
84	नई बस्ती व दीवान खाना के 8 औलिया की सीरत	हिन्दी	48
85	कब्रिस्तान पीर गीलानी के 5 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
86	कब्रिस्तान पंचकुइयां के 8 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
87	आगरा के गौस और 8 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
88	जमना पार आगरा के 12 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
89	मिर्ज़ा खानदान के 4 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
90	तज़क्कुरे विसाल औलिया का विसाल दर महीना व साल	उर्दु	514
91	हर्फों के राज़	उर्दु	200

फेहरिस्त